अन्तरा शब्दशक्ति

मार्च 2019 (अंक-6) मासिक वेब पत्रिका

नारी विशेषांक

(होली पर विशेष खंड)

नारी सर्जक है, रंग है, उमंग है, सृष्टि का अभिन्न अंग है,
सार्थकता तभी है जब पुरुष और आधी आबादी (नारी) संग है।

www.antrashabdshakti.com

वेबपत्रिका के अब तक प्रकाशित अंकों की एक झलक

अन्तरा-शब्दशक्ति परिवार

संस्थापक एवं प्रधान संपादक
डॉ प्रीति सुराना
(हिन्दी, साहित्य एवं समाज सेवी)

सह संस्थापक
समकित सुराना
(गौसेवी एवं समाजसेवी)

सहयोगी एवं सलाहकार

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'
(पत्रकार, लेखक एवं हिन्दीसेवी)

कैलाश बिहारी सिंघल
(लेखक एवं साहित्यसेवी)

ब्रजेश शर्मा 'विफल'
(लेखक एवं साहित्यसेवी)

कीर्ति वर्मा
(लेखिका एवं साहित्यसेवी)

पिंकी परुथी 'अनामिका'
(लेखिका एवं साहित्यसेवी)

अदिति संजय रूसिया
(लेखिका एवं समाजसेवी)

हेमंत बोर्डिया
(लेखक एवं साहित्यसेवी)

शिखा जैन
(हिन्दीसेवी एवं समाजसेवी)

ग्राफ़िक्स:- डॉ. प्रीति सुराना

•जय हिन्द-जय हिन्दी•

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

अन्तराशब्दशक्ति
मासिक वेब पत्रिका

वर्ष -2 अंक-6 मूल्य 25/-
मार्च 2019)

संपादकीय	4-5
होली विशेष खण्ड	6-9
काव्य खण्ड	10-11
आलेख खण्ड	12-17
कथा खण्ड	18-32
परिचर्चा	23-27
साक्षात्कार	28-32
समीक्षा	33-34

अगले अंक के लिए रचनाएँ
antrashabdshakti@gmail.com
पर **30 मार्च 2019** तक भेजें।

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

नोट:- पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिये उत्तरदायी हैं। किसी भी कानूनी विवाद का क्षेत्र वारासिवनी रहेगा।

संपादकीय

क्या वाकई ब्रह्माण्ड को समझना आसान, पर महिला खुद ही एक रहस्य है?

विगत वर्ष में हमने एक महान वैज्ञानिक प्रोफेसर स्टीफ़न हार्किंग को खो दिया जो कि ब्रह्माण्ड की खोज में लगे हुए थे। स्टीफन हॉकिंग ने ब्लैक होल और बिग बैंग सिद्धांत को समझने में अहम योगदान दिया। उन्होंने दो विवाह किए। उस आधार पर नारी को लेकर उनका एक कथन अखबारों में प्रमुखता से छाया हुआ है कि ब्रह्माण्ड को समझना आसान, पर महिला खुद ही एक रहस्य है। कमोबेश इसी तरह की और भी बातें कई लोग अपने हिसाब से कह चुके हैं जो कि उनके अपने व्यक्तिगत अनुभव रहे होंगे। क्या आप को भी लगता है कि स्त्रियों को समझना इतना कठिन है?

आश्चर्य की बात नहीं कि आज स्त्री वर्ग खुद विमर्श कर रहा है कि हर बार इस तरह की बातों का सामना क्यों करना पड़ता है?

सबके अपने मत सबकी अपनी सोच होती है तो सोचा आज मैं भी सोचूं इस विषय पर। जितना सोच पाई मैं उसका सार यही निकला कि स्त्री हमेशा से प्रकृति, संस्कृति, परिस्थिति, नियति, अनुभूति, अभिव्यक्ति जैसी अनेकानेक स्त्रीलिंग वाली बातों से प्रभावित है जिसपर गौर किया जाना चाहिए।

स्त्री की प्रकृति संवेदनशील है जो हर छोटी से छोटी बात से प्रभावित होती है। अब तक संस्कृति ने स्त्री को बहुत हद तक प्रतिबंधित रखा। भारतीय संस्कृति की बात करें तो देवी से दानवी तक, अबला से सबला तक, बेचारी से वीरांगना तक अनेकानेक रूपों में वर्गीकृत किया गया है। रही बात परिस्थिति की तो स्त्री को तन-मन-धन के अनुसार कभी सौंदर्य ने छला, कभी पैसों की जरूरत और लालच ने तो कभी प्रेम और रिश्तों ने।

स्त्री की नियति है कि वह माँ है और मातृत्व के इस गौरव के साथ साथ अनेकानेक दायित्वों का निर्वहन करती हुई भी पुरुष के बिना अपूर्ण है क्योंकि मातृत्व का गौरव बिना पुरुष के संसर्ग के संभव नहीं है।

अनुभूति के लिहाज से स्त्री को एक अनूठी संरचना माना जाता है जो सृष्टि को चलाने में सहायक है।

अभिव्यक्ति के परिदृश्य में शारीरिक संरचना के सौंदर्य और गुणदोष सर्व विदित हैं।

स्त्री को पुरुष ने समझा या नहीं, स्त्री पुरुष के लिए रहस्य है, बला है, अबला है, प्रेरणा है या जो कुछ भी है,..।

एक सवाल हमेशा मेरे मन में उठता है कि क्या खुद स्त्री अपनी क्षमताओं और सीमाओं को या अपनी प्रकृति और नियति को समझ पाई है?

आज स्त्री को पुरुष क्या समझता है ये उनके अनुभवों की कहानी उनकी जुबानी हो सकती है पर सोचने का विषय ये है कि क्या एक स्त्री दूसरी स्त्री को समझती है,...?

स्त्री की स्त्री से प्रतिस्पर्धा, स्त्री का सफलता के लिए स्त्री का हाथ थामने की बजाय पुरुष का सहारा लेने की प्रवृति, स्त्री के अंदर कपट या मायाचार की प्रबलता, स्त्रीत्व और स्त्री सौंदर्य का दुरुपयोग जिसे शास्त्रों में त्रियाचरित्र कहा गया है,.. ये सभी कारक वो कमज़ोर तथ्य है जो स्त्री और पुरुष की तुलना में स्त्री को कमतर आंके जाने का कारण हैं।

विचारणीय प्रश्नों में यह पक्ष निष्पक्ष होकर सोचा जाना चाहिए कि शास्त्रों में क्यों लिखा गया है कि स्त्री ही स्त्री की प्रथम शत्रु है। जिसके प्रत्यक्ष उदाहरण समाज के घर-घर और दर-दर में मिल जाएंगे। कैकेयी, मंदोदरी से आधुनिक स्त्री की व्यथा और कथा ही प्रमाणिकता के लिए पर्याप्त है,...जरूरत केवल खुद में झांकने की है। रामचरित मानस में रावण के द्वारा मंदोदरी को कहे गए इस कथन पर विचार अनिवार्य है:-

"नारि सुभाऊ सत्य सब कहहीं ।
अवगुन आठ सदा उर रहहीं ।
साहस अनृत चपलता माया ।
भय अविवेक असौच अदाया ।"

पुरुष ने जो उपमाएं सदा से स्त्री को दी है उसके लिए स्त्री स्वयं जिम्मेदार है। आज जरूरत कौन क्या सोचता है के दायरे से बाहर आकर हम क्या हैं इसे सिद्ध करने की है जो अपनी मानसिकता के दायरे को बढ़ाए बिना या स्त्री-पुरुष विमर्श से बाहर निकल कर मानवतावादी विमर्श, सहयोग, सम्मान, सामंजस्य से ही संभव है।

एक और जरूरी बात जिससे बचना चाहिए कि एक पक्ष में हम ही शास्त्रोक्तियों का उदाहरण देकर दूसरे पक्ष में उसे अमान्य घोषित करते हैं जैसे शास्त्रकार भी पुरुष ही थे आदि,.. आखिर ये कब तक? इसीलिए मैंने स्त्री या पुरुष विरोधी नहीं बल्कि आत्मावलोकन का पक्ष रखा कि जो है वो क्यों है? क्या हम इसका खंडन करने में समर्थ हैं? यदि हाँ! तो सदियों की बेड़ियाँ तोड़ने का साहस वीरों और वीरांगनाओं ने कर दिखाया होता।

आज आत्मावलोकन के साथ-साथ केवल विमर्श ही नहीं बल्कि कुछ कर दिखाने का युग है और हम सौभाग्यशाली हैं कि आधुनिकीकरण के दौर में जन्में हैं तो आइए इसका सदुपयोग करें।

फागुनी मौसम में सभी सुधि पाठकों को रंगों से भरे सुखद जीवन की शुभकामनाएँ एवं बधाई और साथ ही एक महत्वपूर्ण बात:-

नारी सर्जक है, रंग है, उमंग है,
सृष्टि का अभिन्न अंग है,
सार्थक तभी है जब पुरुष
और ये आधी आबादी (नारी) संग है।

डॉ. प्रीति सुराना
संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति

होली (विशेष खण्ड)

कैसे मनाएं सार्थक होली बच्चों के साथ?

विभिन्न सांस्कृतिक त्यौहारों से फलते फूलते हमारे भारत देश में होली का अनूठा महत्व है। होली निश्चित ही देश का सबसे ज़्यादा उत्साहवर्धक और रंगीन त्यौहार है। सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव और अत्याधुनिक जीवनशैली के चलते होली जैसा त्यौहार भी अब अपनी पहचान खोते जा रहा है । बच्चों में होली के प्रति उदासीनता के लिए हम भी कहीं ना कहीं जिम्मेदार हैं। एकल परिवार की बढ़ती संख्या, समयाभाव के कारण रिश्तेदारों से दूरी, सामाजिक दिखावे के बढ़ते प्रचलन और बाजारवाद के चलते हम अपने बच्चों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर और होली पर्व का महत्व समझाने में अक्षम रहते हैं। आइए जानें हम अपने बच्चों के साथ सार्थक होली कैसे मना सकते हैं -

१. नैतिक मूल्य - होली के पौराणिक महत्व को समझाने के लिए बच्चों को होलिका, प्रह्लाद, हिरण्यकश्यप की कहानियां सुनाएं। उन्हें कहानी से संबंधित किताबें उपलब्ध कराएं। कथा को मनोरंजक बनाने के लिए कॉलोनी के बच्चों को एकत्र कर होली की कहानी पर नाट्य प्रस्तुति, कठपुतली का शो आदि रखे जा सकते हैं।

२. होली के रंग - होली और रंग एक दूसरे के पर्याय हैं लेकिन मिलावट के इस दौर ने होली के रंग और अबीर को भी अछूता नहीं छोड़ा है। जायज़ है कि अभिभावक अपने बच्चों को होली खेलने से दूर रखते हैं। किन्तु आप इस होली को पर्यावरण के साथ सामंजस्य बैठा कर भी मना सकते हैं। बच्चों के साथ प्राकृतिक रंग घर पर बनाएं - जैसे, हल्दी से पीला रंग, चुकंदर से लाल, मेंहदी से हरा, मैदा से सफ़ेद, काली गाजर से बैंगनी रंग आदि । इन्हें अपने पसंद के अनुसार गीले या सूखे रंगों के तौर पर खेलें। खुद अपने बनाए रंगों से खेलने का उत्साह बच्चों को बहुत पसंद आएगा और आप उनकी सेहत को लेकर निश्चिंत रह सकेंगे।

३. होली से जुड़े शिल्प कार्य - बच्चों को हस्तकला में भागीदारी करना बहुत लुभाता है। आप अपने बच्चों की कल्पनाओं को पंख दें और उन्हें पुरानी रंगीन बिंदियों, रंगीन बटन, काग़ज़ आदि से ग्रीटिंग कार्ड, होली के बैनर, सजावट के सामान आदि बनाने को प्रेरित करें और उन्हें अपने रिश्तेदारों, दोस्तों को होली उपहार स्वरूप भेंट करें।

४. होली के व्यंजन - बिन गुझिया, पापड़ होली की कल्पना करना ही बेमानी है। आज के व्यस्त दिनचर्या और रेडीमेड युग में हम किचेन में जाना समय की बर्बादी समझते हैं। लेकिन सेहत की खातिर मिलावट से दूर रहकर और घर में बने व्यंजनों का लुत्फ उठाकर होली के मज़े को दोगुना किया जा सकता है। थोड़ा ही सही पर गुझिया, नमकपारे, शककरपारे, पापड़ आदि घर में बनाएं और बच्चों को उसमें ज़रूर शामिल करें। इससे हमारी परंपरागत पाक कला जीवित रहेगी और सेहत से समझौता भी नहीं करना पड़ेगा।

५. पारिवारिक और सामाजिक मूल्य - आज ज़्यादातर परिवार एकल इकाई है और समायभाव के कारण एक ही शहर में होने पर भी दोस्तों, रिश्तेदारों से मिलने जुलने का समय नहीं। कई परिवार तो होली आदि त्यौहार पर अपना देश छोड़ दूसरे देशों या जगहों पर पर्यटन को निकल जाते हैं। क्या कभी आपने सोचा है कि बच्चों को सामाजिक रूप से विकसित करने में यह कितना बड़ा अवरोध है? एकाकी जीवन को इससे कितनी बढ़त मिलती है? क्यों ना अबकी होली पर अपनों के लिए समय निकाला जाए और बच्चों को मेलजोल बढ़ाने का मौका दिया जाए। अपने दोस्तों को घर बुला कर जो अनमोल समय आप साथ बिताएंगे वो निश्चित ही यादगार होगा। आपकी इस पहल से आपके रिश्तेदार भी प्रेरित होंगे अगली होली फिर साथ मनाने को।

६. वैज्ञानिक विशेषता - बच्चों को होलिका दहन और होली के पीछे का विज्ञान समझाएं। उन्हें बताएं कैसे होलिका दहन से वातावरण के कीटाणु नष्ट होते हैं और कैसे प्राकृतिक रंगों से होली खेलना शरीर पर चिकित्सकीय प्रभाव डालता है।

७. प्रकृति से प्रेम - होली वसंत के आगमन को भी चिन्हित करती है। बच्चों को दिखाइए कैसे होली के साथ प्रकृति में रंग भरने शुरू हो जाते हैं। नई कोमल, हरी पत्तियां, रंगीन फूल, आदि खिलने शुरू हो जाते हैं। इसी मौके का लाभ उठा कर बच्चों को पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूक बनाइए। उन्हें प्राकृतिक रंगों से होली खेलने और केमिकल्स से दूर रहने का महत्व समझाइए।

८. परंपरा का पुनर्जीवन - एक अभिभावक और भारत के नागरिक के तौर पर हमारी एक ज़िम्मेदारी ये भी है कि हम अपने बच्चों को हमारी परम्परा और संस्कृति से अवगत कराएं। होली पर सभी के साथ मिलना, अपनी मातृभाषा में होली अभिवादन करना, होली के लोकगीत सुनना आदि कुछ उपाय हैं जिनसे हम अपनी परंपराओं को पुनर्जीवित कर सकते हैं।

९. सांस्कृतिक अंगीकरण - भारत की विशेषता उसकी विविधता में है। हर त्यौहार एक दूसरे से भिन्न और अपने में विशिष्ट है। होली भी इसका अपवाद नहीं। अपने बच्चे को सामाजिक भेदभाव से दूर रखिए और उसे पर्व का आनंद लेने दीजिए। विभिन्न जाति, परिवेश, और धर्म के बच्चे जब साथ में त्यौहार मनाएंगे तभी उनमें एकता, देशप्रेम आदि जैसे सकारात्मक भाव पनपेंगे।

होली आने में अब कुछ ही दिन शेष हैं। ज़रूरत है सिर्फ कुछ सुरक्षा निर्देशों को ध्यान में रख, होली के उत्साह और जोश में सराबोर हो जाने की। अपने बच्चे को इस पर्व का भरपूर आनंद लेने दीजिए और खुद भी उनके साथ बच्चा बन आनंद को दुगना कीजिए।

- कृति गुप्ता, नई दिल्ली

हाइकु गीतिका

चंचला इंचुलकर सोनी

सिहरे मन,बयार फगुनाई,फागुन संग।
प्रीत के रंग,रंगीला तन मन,फागुन संग।

बासंती बोली,सुमन सतरंगी, विधाता होली।
रंग रसिया,फूल केसर होली,फागुन संग।

फाग बसंत,रंग जुगलबंदी,खिला जीवन।
प्रीति निगोड़ी,विचालित नयन,फागुन संग।

जल अमोल,सूखे रंग गुलाल,तिलक होली।
हंसी ठिठोली,रंगों की पाठशाला,फागुन संग।

रंगीले बाण,फागुल तरकश,आहत मन।
सुर आलाप, बुनते सरगम,फागुन संग।

मधुर होली,नेह रंग बौछार,सुधा लुटाती।
भांग ठंडाई,मिठास एकादशी,फागुन संग।

शहर गाँव,दहे नीम की छांव,फागुन पाँव।
गोरी उदास,बेरंग सारे रंग,फागुन संग।

गुलाबी गाल,तूने मला गुलाल,मचा बवाल।
ढाई आखर,बंटे चार नयन, फागुन संग।

कैसे खेलूं फाग

श्रीमती नवनीता दुबे "नूपुर"

सुलग रही आतंकी आग,
जल रहे जज्बात,
लाशों की होली जला के,
वे खेल रहे रक्तिम फाग।।

निर्ममता का तांडव,
क्रंदन का साज,
आयी फागुनी बयार,..कैसे खेलूं फाग।।

माँ भारती पुकारे आज,
करो वीरता का अभिनन्दन,
बचाओ भारत माँ की लाज,..कैसे खेलूं फाग।।

शौर्य-गुलाल से करो सज्जित,
माँ भारती का ताज
फागुनी ब्यार आयी,..कैसे खेलूं फाग।।

बहकी हर दिशा दिशा
बारूदी ढेर में बैठा इंसान,
सिसक रही मानवता, अलाप रही राग,
आपसी हो मिलाप,..कैसे खेलूं फाग।।

सुलग रही आतंकी आग
जल रहे जज्बात,..कैसे खेलूं फाग।।

मेरे देश की होली

नीरजा मेहता 'कमलिनी

मेरे देश की होली, मेरे देश की होली,..
रंग बरसाए, महक उड़ाए
जांबाज़ों की टोली
मेरे देश की होली, मेरे देश की होली।

अबीर गुलाल से कर अभिनंदन
सौरभ माटी की उड़ाये,
दुश्मन को ललकार दे ऐसे
फौजी देश में छाए,
भर पिचकारी, सीना तान के
दाग़ दें ऐसी गोली,
मेरे देश की होली , मेरे देश की होली।

शौर्य पराक्रम साहस हिम्मत
रंग जिनमें हैं समाये,
कभी जल से, कभी थल से रंग
कभी नभ से भी बरसाए,
डरे नहीं वो लगा रहे
मस्तक पर जीत की रोली,
मेरे देश की होली, मेरे देश की होली।

लाल हरे औ' नीले पीले
रंग न उन्हें सुहाये,
देश की ख़ातिर जां लुटाते
फौजी रंग ही भाये,
मुख से उनके निकले हरदम
देशप्रेम की बोली,
मेरे देश की होली, मेरे देश की होली।

फागुन में ये रंग बसंती
राग देश ही सुनाये,
वीर रस की भंग छलकाकर
देशभक्ति नशा चढ़ाये,
तीन रंग में भीग रही
भारत माता की चोली,
मेरे देश की होली, मेरे देश की होली।

रंग केसरी ओढ़ चुनरिया
लहू से मांग सजाए,
हाथ तिरंगा थाम शहीद की
सुहागन वो कहलाये,
होली में मना रहे दिवाली
जला दुश्मन की खोली,
मेरे देश की होली, मेरे देश की होली,

रंग बरसाये, महक उड़ाये
जांबाज़ों की टोली,
मेरे देश की होली, मेरे देश की होली।

काव्य खण्ड

शिव

डॉ.अर्पण जैन 'अविचल'

हिन्दीग्राम, इंदौर

हे! भोले भण्डारी दयानिधान
शंकर तुम हो, करुणानिधान
कंठ में रोका विष भी तुमने
तुम ही शंका का समाधान
तुम रुद्र रुप तुम हो सर्पधारी
तुम देव-असुर सबके नाथ
तुम कैलाशपति तुम गौरीशंकर
तुम ही भक्तों के भोलेनाथ
महेश हो तुम श्रेष्ठ जगत में
प्रलय रोकने वाले हो शंभु
अंधियारे को उजियाला करते
तुम महाकाल तुम विश्वनाथ
पिनाकी बन कर रहते मस्त
शशिशेखर तुम बनते निराले
विरुपाक्ष तुम भक्त वत्सल
गटक जाते तुम विष के प्याले
तुम शर्व हो श्रीकण्ठ तुम्हीं हो
त्रैलोकेश्वर नीलकंठ भगवान
शितिकण्ठ तुम शिवाप्रिये हो
उग्र तुम ही, तुम गंगाधर महान
सुरसुदन तुम ललाटाक्ष हो
कृपानिधि तुम परशुहस्त
तुम त्रिपुरांतक तुम वृषांक हो
तुम जटाधर तुम वृषभारुढ़
हे भोले, हे कृपानिधान
रक्षा करना जग की भगवान
हम हैं शरणागत प्रभु तेरे
तुम साथ सदा रहना भगवान.!

पतिविहिना

रचना सक्सेना,इलाहाबाद

है नही अपराध जिसका,
दोष फिर भी मानती वह।
परम्परा की सीढ़ियो पर,
मान आँचल बाँधती वह।
त्याग कर प्रिय देह को,
अश्रु सावन हारती वह।
नेह नदिया प्रेम प्यासी ,
सागर डूबना जानती वह।
छोड़ बचपन उम्र जवानी,
टूटा दर्पण सवाँरती वह।
लिखती कहानी सब्र की,
प्यार करना जानती वह।
माँग का एक लाल रंग,
चूड़ी खनकाती हाथ वह।
त्याग कर सुहाग अपना,
दान करना जानती वह।
धवल धवलित धवलिमा,
सतरंग अतीत हारती वह।
सावन से भीगी हरित हिना,
सुहाग अपना मानती वह।
दोष न था दोषी फिर क्यो?
निःशब्द खड़ी एकांत वह।
संवरता दर्पण टूटा है क्यो?
पतिविहिना अबला है जो।

नारी

पूनम (कतरियार)

ये जो मौन मुस्कुराकर,
रह जाती हूं न,
हंसकर उड़ा देती हूं,
तल्ख बातों को.
नि:शब्द झेलती हूं,
चूभते-कटाक्षों को.
बहा देती हूं आंसूओं में,
अदम्य इच्छाओं को.
नोंचकर फेंक देती हूं,
सपनों के पंखों को.
न....न...न...न...
कतई नहीं 'नारी' हूं,
निम्न या कमतर हूं,
निरीह या कमजोर हूं.
बस, इसलिए कि,
शेष मुझी में है,
स्निग्धता-तरलता.
मेरे ही भीतर जीती हैं,
मौज में संवेदनाएं.
आलोड़ित है मेरा ही उर,
प्रेम-करूणा,दया-माया से.
बीजवपन-पल्लवन करती,
तुम्हारी जिजीविषा को,
प्रेरित कर, उड़ान देती हूं
जमीं से आसमां तक तुम्हें,
नित नये आयाम देती हूं,
सपनों की पतंग को तुम्हारे.
हां, अहंकार का रावण,
जब लगता है लीलने तुम्हें,
हठधर्मिता से बलात्
संप्रभु बनना चाहते हो,
मेरी ही सृजित सृष्टि की.
खींच लेती हूं डोर,
दुर्गा-काली कहलाती हूं,
रणचंडी बन जाती हूं.
और सत्ता में अपनी,
भागीदारी भी दर्शाती हूं...!

नारी माँ है

किशोर छिपेश्वर"सागर"
बालाघाट(मध्य-प्रदेश)

नारी माँ है भगवान का अवतार है
सबकी खुशियों का वही आधार है!
नारी मन कोमल नारी से संसार है
नारी बिन कुछ नही सब निराधार है!
नारी मित्र,अर्धांगिनी,नारी के उपकार है
नारी सौंदर्य का रूप,नारी मददगार है!
नारी शौर्य का रूप,नारी वफादार है
नारी से ही जीत है,कभी भी ना हार है!
नारी में स्वाभिमान, नारी खुद्दार है
नारी पे अभिमान,नारी से घरबार है!
नारी जीत की राह,नारी असरदार है
नारी से सम्भव,सपने सभी साकार है!

समय की सीख या समय से सीख

जब बाबर ने अपने घोड़ों का मुँह भारतवर्ष की ओर मोड़ा था उस समय उसकी पलटन में मात्र दस हज़ार सैनिक थे। फिर ये चमत्कार कैसे हुआ की उसकी क्षीणतम सेना ने महान और शक्तिशाली भारतवर्ष को अपने अधिकार में ले लिया? ऐसा क्या हुआ कि मुट्ठी भर बबरिया सैनिकों ने मन भर के भारत को अपने आधिपत्य में ले लिया?

कहा जाता है की बाबर हमारी सैन्य शक्ति को देख लौटने पर विवश हो गया था किंतु जिस रात वह लौटने का मन बना रहा था उस रात उसने भारतीय राजा के विशाल सैन्य शिविर में कई अलग-अलग स्थानों पर आग जलते हुए देखी उसने अपने सेना नायक से इन अग्नि खंडों का कारण जानना चाहा तो उसे पता चला की ये अलग- अलग चूल्हों में जलने वाली आग है, ये भारतीय सैनिक हैं जो अपनी रसोई बना रहे हैं वे विभिन्न वर्गों और वर्णों में बँटे हुए हैं ये एक दूसरे के साथ भोजन नही करते।

बस फिर क्या था ! बाबर के हताश मन में आशा की चिंगारी सुलग गई उसने विचार किया की जिस सेना में सैनिक एक दूसरे को समान नही मानते, जो वर्गों, वर्णों में बँटे हुए हैं, जो अपने ही लोगों को हीनता की दृष्टि से देखते हैं, जो अपनों का ही अपमान करने में विश्वास करते हैं जो एक दूसरे के मान की रक्षा करने के स्थान पर एक दूसरे को अपमानित करते हुए स्वयं के अभिमान को पुष्ट करते हैं वे बाहर से भले ही विशाल, शक्तिशाली, और अखंड दिखाई दें किंतु अंदर से बुरी तरह खंडित होते हैं, ऐसे लोगों को शक्ति से नही युक्ति से परास्त किया जा सकता है। और तब बाबर ने लौटने का विचार छोड़ दिया, उसने भारत की शक्ति को भारत के विरुद्ध ही इस्तेमाल करते हुए मुग़ल साम्राज्य की नींव रख दी।

इतिहास में दर्ज कारणों पर ग़ौर करेंगे तो हम पाएँगे कि भारत की पराजय का कारण कोई और नही हम भारतीय ही थे, हमारा एक दूसरे के प्रति घोर अविश्वास, एक दूसरे को मिटाकर समाप्त कर देने लालसा, एक दूसरे के लिए नफ़रत, वैमनस्य, शंका, भर्त्सना का भाव, एक दूसरे को अपमानित, कुंठित करने की इच्छा ही हमारी पराजय के मूल में थी।

हम एक देश में रहने के बाद भी एक दूसरे को हेय दृष्टि से देखते थे, अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए हम अपने ही लोगों को अश्रेष्ठ साबित करने का प्रयास करते थे, हमारी योग्यता का प्रमाण हमारा कर्म नहीं अपितु किसी दूसरे को अयोग्य साबित करना हो गया था।

जब हम स्वयं ही एक दूसरे को मिटा देना चाहते हों, हम स्वयं ही एक दूसरे के लिए ईर्ष्या, क्रोध, कुंठा से भरे हुए एक दूसरे को अपमानित करने की चाहत से भरे हुए हों तब किसी अन्य को हमें पराजित करने के लिए उद्यम नही करना पड़ता।
किसी शायर ने कहा है-

“ना झगड़ें हम आपस में, झगड़कर टूट जाएँगे।
तुम्हारा आइना हम हैं, हमारा आइना तुम हो॥”

स्मरण रखिए- किसी और से लड़कर तो हम विजय प्राप्त कर सकते हैं किंतु स्वयं के विरुद्ध छेड़ा गया युद्ध हमें पराजय की पीड़ा देता है।

आशुतोष राणा

बेटी बने सबल और आत्मनिर्भर

शिखर चंद जैन

१४ वर्षीय अन्वेषा कराटे क्लास ज्वाइन करने के लिए अपनी ड्रेस पहन कर निकलने की तैयारी कर रही थी. तभी उसके दादा-दादी आ गए. अन्वेषा उन्हें देखकर खुशी से चहक उठी, "अरे अम्मा! आज इत्ते दिन बाद अचानक...कोई खबर भी नहीं.."कहकर अन्वेषा दादी से लिपट गयी. दादी आज पूरे दो साल बाद जयपुर से आई थी. आवाज सुनकर अनामिका भी दरवाजे पर आ चुकी थी. उसने सास-ससुर को प्रणाम किया. अन्वेषा को देर हो रही थी,इसलिए वो दादी से यह कहकर निकल गयी कि घंटे भर में वापस आती हूँ. सास से रहा ना गया. उन्होंने अनामिका से पूछा, "अरी अनामो! ये अपनी अन्नू अजीब सी ड्रेस पहन कर कहाँ गयी है रात को आठ बजे?"

अनामिका बोली, "वो कराटे सीखने जाती है ना...आ जाएगी नौ-साढ़े नौ बजे तक." उसकी बात सुनकर सास को दोहरा झटका लगा. बोली, "बावली हुई हो क्या? लड़की की जात को कराटे- वराटे सिखा कर घर में उपद्रव करवाना है क्या? इसको कौन सी फ़ौज में नौकरी करनी है. और अकेली लड़की रात को साढ़े नौ बजे आएगी?... कोई ऊंच-नीच हो गयी तो? अनामिका कुछ कहती उससे पहले ही ससुर ने कहा, "अरे, तू अपने जमाने की बातें छोड़. आजकल तो लड़कियों के लिए ये सब बड़ा जरुरी है. लड़की की जात है तो क्या इंसान नहीं वो? और ऊंच-नीच रात या दिन नहीं देखती...अनामिका समझदार है....बेटी सुरक्षित, अपनी रक्षा करने में खुद समर्थ रहे और आत्मविश्वास से भरी रहे तभी तो उसे ये सिखा रही है. ससुर की समझदारी भरी बात सुनकर अनामिका ने चैन की सांस ली।

अन्वेषा की दादी जैसी मानसिकता अब भी बहुत से लोगों की मिलेगी.सिर्फ बुजुर्गों ही नहीं बल्कि खुद को आधुनिक और पढ़ा-लिखा मानने वाले भी ऐसी मानसिकता से उबर नही पाते. बेटियों के लिए लगातार बिगड़ रहे माहौल और उनके साथ छेड़छाड़ या मोलेस्टेशन की बढ़ती घटनाओं के बीच आज जरुरत इस बात की है कि हम बेटियों को किसी मामले में बेटों से कमतर न मानें. उन्हें आत्मरक्षा के लिए तैयार करें,दूसरों का मुंह देखने की बजाय वे हर अत्याचार का मुंहतोड जवाब दे सकें इसके लिए उन्हें मानसिक,शारीरिक और आर्थिक रूप से मजबूत और आत्मनिर्भर होने की प्रेरणा बचपन से ही दें और उनका पालन-पोषण भी इस प्रकार करें कि वे कभी खुद को लड़की होने की वजह से कमजोर न समझें।

बार बार लड़की होने का अहसास न कराएं –

अक्सर मांएं अपनी बेटी की सुरक्षा की चिंता की वजह से उसके साथ घर के किसी पुरुष सदस्य (चाहे वह छोटा भाई ही क्यों हो) को हर जगह उसके साथ भेज देती हैं या खुद साथ जाती हैं. यह बात बेटियों को बहुत अखरती है. जरा सोच कर देखें , ऐसा करके आप अनजाने में ही उसे आत्मनिर्भर बनने से रोक तो नहीं रहीं? कई घरों में लड़कियों को शुरु से ही नकारात्मक माहौल में पाला जाता है . उन पर हजार बंधन लादे जाते हैं. ये मत कर, वो मत कर, उसे दीदे फाड़ कर मत देख, यूं मत हंस ऐसे मत झुक, ऐसे मटक-मटक कर मत चल आदि। इतने सारे ना सुनते-सुनते लड़की के कान पकने लगते हैं और वह सहमी-सहमी सी रहने लगती है। आप अपनी बेटी को ऐसा नेगेटिव वातावरण न दें और बात-बात में रोका टोकी से बचें। उसे खुद पर होने वाले हर अत्याचार का विरोध करना

सिखाएं, किसी गंदी टिप्पणी पर कठोर और दबंग प्रतिक्रिया करना सिखाएं। अध्ययन और अनुभव बताते हैं कि दबंग छवि बोल्ड और साहसी लड़कियों से लड़के डरते हैं और उनके साथ छेड़छाड़ या बकवास की हिम्मत नहीं करते। दब्बू और डरपोक लड़कियों की बजाय इनकी जिन्दगी आसान होती है।

बेटी को ऐसे उदाहरणों से प्रेरित करें- खुद को अपडेट करने के लिए किताबें पढ़े या इंटरनेट का सहारा लें और अपनी बेटी को ढेर सारी सफल महिलाओं के उदाहरण बता कर प्रेरित करें कि जब वे महिलाऐं होकर ऐसा कर सकती हैं तो आपकी बेटी क्यों नहीं. मैराथन में तमाम शारीरिक, मानसिक,आर्थिक प्रतिकूल परिथितियों के बावजूद विशाली कस्तुरे,प्रीति अघालयम,दिव्या पाराशर, श्वेता देवराज,अर्पिता मैत्र जैसी सैंकडों बेटियों ने उपलब्धि हासिल की. ये बेटियां अपने वक्त से कहीं आगे रहीं और इसलिए इनका नाम आज आदर से लिया जाता है- पहली फायर फाइटर- हर्शिनी कान्हेकर, पहली यात्री रेलगाड़ी चालक- सुरेखा यादव, पहली महिला ग्रामीण बैंक का आयडिया- चेतना सिन्हा, पहला फेमिनिस्ट पब्लिशिंग हाउस- उर्वशी बुटालिया, सरोजिनी नायडू- कई मामलों में वक्त से आगे. इन्होने भीड़ से अलग हट कर काम किया और आज इसीलिए इनका नाम इज्जत से लिया जाता है.मूक बधिरों की आवाज बनी-स्मृति नागपाल, गैस त्रासदी पीड़ित विधवाओं की पैरोकार- डॉ स्वाती तिवारी, पहली भारतीय साइक्लिंग चैम्पियन– देबोराह हेराल्ड,लद्दाख की पहली महिला गाइड- थिन्लस कोरोल, ड्रोन बनने वाली-समप्रीती भट्टाचार्य, अमरीका. जिन्होंने फ़ौज में काम किया और दूसरों को भी प्रेरित किया- कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन, पुनीता अरोड़ा, पद्मावती बंदोपाध्याय, सीमा राव, हरित कौर देवल. ये तो मात्र चंद उदाहरण हैं. आप खोजने निकलेंगी तो ऐसे सैकड़ों नाम सामने आते चले जाएँगे।

उसके साथ बराबरी का व्यवहार करें – कई घरों में फाइनेंस या अन्य महत्वपूर्ण मसलों पर घर के बेटों से ही राय-मशविरा किया जाता है. पैरेंट्स का माइंडसेट ऐसा ही होता है कि इन बातों से बेटियों को क्या मतलब. वे तो पराया धन हैं. मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि पैरेंट्स की ऐसी मानसिकता के चलते ही अधिकांश महिलाओं में आत्मविश्वास काफी कम होता है. वे खुद को रसोईघर तक ही सीमित मानने लगती हैं. धीरे-धीरे इन महिलाओं का आत्मविश्वास इतना कम हो जाता है कि मामूली सी बात के लिए भी इन्हें घर के पुरुष सदस्य की ओर ताकना पड़ता है. इन्हें इतना भी पावर नही दिया जाता कि दूध या अखबार वाले का हिसाब खुद करके उसे पेमेंट कर दें. ऐसा करने वाले माता-पिता अपनी बेटी के भविष्य के साथ खिलवाड़ ही करते हैं. लगातार ऐसा व्यवहार होने पर ये खुद को कम गुणी या पुरुषों की तुलना में नासमझ महसूस करने लगती हैं। अपनी बेटी को शुरु से ही आत्मविश्वासी बनाएं, उसके अच्छे कार्यों की प्रशंसा करें और उसकी क्षमताओं का बखान करें। घर के छोटे-बड़े मसलों पर निर्णय लेने की प्रक्रिया में उसे भी शरीक करें. इससे उसे खुद को निरंतर इम्प्रूव करने की प्रेरणा मिलेगी और आत्मविश्वास बुलंद होता चला जाएगा।

बेटी को हर काम की ट्रेनिंग दें – आज की तारीख में लड़कियां हर प्रोफेशन में आगे हैं. इसलिए पढ़ाई से लेकर जॉब तक उन्हें अबाध आगे बढ़ने दें। किसी काम के लिए यह न कहें कि 'यह काम लड़कियों के लिए नहीं है।' बिटिया को घर का राशन या स्टेशनरी का सामान लाने तक सीमित न करें । चाहे घर में बल्ब बदलना हो, साइकिल में हवा भरनी हो, स्कूटर की स्टेपनी बदलनी हो, फ्यूज में वायर लगाना हो या दीवार में कील ठोकनी हो, ये सब काम बेटी से भी करवाएं। उसका आत्मविश्वास खुद ही जाग जाएगा। संभव हो हो तो बेटी को छोटे-मोटे ट्रेनिंग कोर्स करवा दें जहां उसे कंप्यूटर ठीक करना, बाइक या कार रिपेयरिंग, इलेक्ट्रीसिटी के छोटे-मोटे काम आदि सीखने को मिल सकें। बिटिया को शुरू से ही स्पोर्ट्स

में सक्रिय होने के लिए प्रोत्साहित करें। वह जो भी खेलना चाहे, खेलने दें। क्रिकेट या फुटबाल जैसे खेल लड़कों के हैं, कहकर उसे रोके या टोके नहीं। स्कूल में व्यवस्था हो तो ठीक वरना किसी स्थानीय प्रशिक्षक के यहां उसे जूडो-कराटे जैसी सेल्फ डिफेंस ट्रेनिंग अवश्य दिलवाएं। लड़कों से साथ खेलकूद की गतिविधियों में हिस्सा लेती है, तो लेने दें, इससे उसमें आत्मविश्वास आएगा और वह लड़कों के हावभाव से भी कुछ हद तक वाकिफ हो जाएगी।

सुंदरता की बजाय प्रतिभा निखारने पर जोर दें –शादी की चिंता में बेटियों पर सुन्दर, स्लिम और दमकती-चमकती दिखने के इतना दबाव बनाया जाता है कि वे सचमुच इसी उलझन में फंसकर रह जाती हैं। उन्हें हर वक्त खुद को आकर्षक दिखने की चिन्ता सताती रहती है। चाहे परिजन हो या संगी साथी, विज्ञापन जगह हो या मीडिया सब जगह महिलाओं की शारीरिक खूबसूरती का इतना बढ़ाचढ़ा कर बखान किया जाता है कि वे अपने वजन, रंग और शरीर की बनावट को लेकर ओवर कौंशस हो जाती है और खुद की प्रतिभा को निखारने के प्रति कुछ हद तक लापरवाह हो जाती हैं। कुछ मम्मियां चाहती हैं कि उनकी बेटी बेहद सुंदर दिखे। चाहे इसके लिए बढ़ती बेटी को मेकअप ही क्यों न लगाना पड़े? मांओं को यह समझना चाहिए कि बेटी के अंदर गुणों का विकास जरूरी है, ताकि वो अंदर से खूबसूरत इंसान बने। यही उसका असली मेकअप होगा। अगर बिटिया को मेकअप करना पसंद नहीं तो उस पर अपनी पसंद न थोपें।

उसका आत्मबल बढ़ाएं- आपको अपनी बेटी को प्रेरणा देनी चाहिए कि वह बेकार के सामाजिक दबावों में न आए। हर वक्त खुद को दूसरों की इच्छा के मुताबिक ढालना और परफौर्म करना न तो जरूरी है और न ही व्यावाहारिक है। उसे अपनी मर्जी के अनुसार, अपने विवेक के आधार पर व्यवहार करना चाहिए, अपनी शैली में बातचीत करनी चाहिए, अपने लिए सुविधाजनक और मनपसंद कपड़े पहनने चाहिए, अपनी सुविधा के मुताबिक चलना फिरना और मूवी देखना चाहिए. इसमें कुछ भी गलत नहीं जब तक हम दूसरों के लिए परेशानी का कारण न बनें। आपकी बेटी में असीमित गुण छिपे हुए हैं, उन्हें पहचानने की बजाय अगर आप उसे यह बोलती हैं कि 'तुम यह नहीं कर सकती' तो आप उसे हतोत्साहित ही कर रही होती हैं। यह जरूरी है कि आप अपनी बेटी की प्रतिभा को पहचानें। उसके टैलेंट को निखारने की कोशिश करें। इससे बेटी का मनोबल बढ़ेगा, वह आगे बढ़ने की कोशिश करेगी और अपनी मर्जी से अपना करियर ऑप्शन चुन सकेगी। आज पहलवानी, सेना या पर्वतारोहण जैसे कठिन क्षेत्रों में आई महिलाओं के माता पिता उन्हें हतोत्साहित करते, तो वे यहां तक पहुंचती क्या? इसलिए बेटी के साथ खड़ी हों और उसे एक कम्प्लीट, सेल्फ कॉन्फिडेंट और स्ट्रोंग वुमेन बनाएँ।

शिखर चंद जैन
(मोटिवेशनल लेखक)
SHIKHAR CHAND JAIN
67/49 STRAND ROAD,
3RD FLOOR
KOLKATA-700007(W.B.)
WHATSAPP 9836067535

महिला सक्षमीकरण के लिए आवश्यक कदम

पिंकी परुथी "अनामिका"

नारी तो पहले से ही सशक्त है, उसकी उदारता , दयालुता, ममता, सहृदयता प्रवृत्ति को सदा से ही कमजोरी माना जाता है।

यह तो संकीर्ण मानसिकता पुरुष की ही है, जो उसे नारी को उच्च स्तर पर देखना स्वीकार्य नहीं है। कहीं ना कहीं वह स्वयं ही कमजोर है।

इस मानसिकता के चलते नारी पर प्राचीन काल से ही शोषण किए जाते रहे हैं, लेकिन ऐसा भी नहीं है के इतिहास में कहीं सशक्त नारियों का वर्णन नहीं हो । वो सशक्त नारियाँ ही थीं जिन्होंने ऐसी संतानें दीं, जो देश को परतंत्रता से मुक्त कराने में सफल हुईं।

हमारे देश की सामाजिक मान्यताएँ जिन्होंने विकृत रूप धारण कर लिया, जिसकी वजह से नारी सशक्तिकरण की और नारी सक्षमीकरण की आवश्यकता पड़ी।

अपने अधिकारों की मांग के लिए जूझती हुई नारियों को देखकर बहुत पीड़ा होती है, उन्हें घर से बाहर आंदोलन करते हुए देखकर, जुलूस निकालते हुए देखकर ,बहुत दुःख होता है। ऐसा होना नहीं चाहिए। समय व्यर्थ जाता है। ऐसे कार्य होने चाहिएँ, जिनसे हमारी ऊर्जा और क्षमता का विकास हो और कार्य फलदाई हो।

यदि हम कहते हैं कि लड़का और लड़की बराबर हैं और उन्हें बराबरी की शिक्षा भी देते हैं ,परवरिश भी बराबरी की करते हैं तो फिर क्यों आवश्यकता है कि लड़कियों के लिए रिजर्वेशन हो। ऐसी माँगें कर के हम स्वयं यह यह बताते हैं कि हम पुरुष से कमजोर हैं।

नारी और पुरुष दोनों ही समाज की वो इकाई हैं, जो एक दूसरे के पूरक हैं। प्रतिद्वंद्वी या प्रतियोगी नहीं ।फिर क्या आवश्यकता है ,इन सब आयोजनों की।

शारीरिक रुप से जो भिन्नता ईश्वर के द्वारा दी गई हैं उसके महत्व को समझना चाहिए। बच्चे का जन्म माँ के शरीर से ही होता है लेकिन खुशी माता पिता दोनों को बराबर होती है। परवरिश में भी पिता बराबर सहयोग करता है।

मेरी बातों से कई लोग असहमत हो सकते हैं किंतु अपना-अपना नजरिया है। सशक्तिकरण हो या समक्षीकरण हो ,कोई आवश्यकता नहीं किसी आंदोलन की और कोई एक दिन मनाने की। कमजोरियाँ जहाँ हैं, उन्नति करने की आवश्यकता है जैसे कि आतंकवाद, गरीबी, अशिक्षा बेरोजगारी, आस्वच्छता, आदि। माना कि कुछ कुरीतियाँ हैं, जो नारी से संबंधित हैं, उन्हें भी सामाजिक कुरीतियाँ ही माना जाए और उसे दूर करने का प्रयास किया जाए, जैसे कि दहेज प्रथा ,यौन शोषण, बाल तस्करी आदि।

समाज में जो अश्लीलता और असभ्यता फैल रही है, उसका दोष पुरुष के साथ नारी का भी बराबर से है, क्यों नारी ने आज स्वयं को पुरुष के हाथ का खिलौना बनने दिया ,क्यों चारित्रिक पतन इस कदर हुआ कि वह सिर्फ शारीरिक उत्तेजना का

कारण बनी । चिंतनीय है यह, विचारणीय भी है क्योंकि चारित्रिक पतन सामाजिक पतन ही है।

कहना आसान है लेकिन अमल में लाना मुश्किल है। फिर भी प्रयास करने होंगे और अभिभावकों को बच्चों की परवरिश को लेकर सतर्क रहना होगा ।शारीरिक भिन्नता को मानसिक भिन्नता न माने ।कंधे से कंधा मिलाकर काम करने का अर्थ यह नहीं है कि अपने मर्यादाओं और नैतिकता को ही भूल जाएँ। हे नारी, जो तुम्हारा है, उसकी माँग करके क्या दिखाना चाह रही हो , बल्कि पुरूष को हावी होने का एक और बिंदु दे रही हो।

मैं नारी हूँ, मैं नारी हूँ, बोल बोल कर काम निकलवाने का क्या औचित्य। अपनी आवृत्ति को सृष्टि के सामंजस्य में लाएँ। सृष्टि की आवृत्ति विशुद्ध अच्छाई की आवृति है। जब आप अपने विचारों को नियंत्रित करना सीख लेते हैं, तो आपके जीवन में ऐसा कुछ नहीं होता, जिसे आप संशोधित, परिवर्तित या बेहतर न बना सकें।

कामुकता और उत्तेजना ,तथा मात्र एक सजावट का सामान ना बन कर अपनी शक्ति को पहचानना होगा। समाज और देश के लिए अपने अस्तित्व को सार्थक सिद्ध करना होगा। सरकार ने पहले से ही नारी उत्थान के लिए कई कार्यक्रम बना रखे हैं ,जरूरत है उनका उपयोग सीखना होगा। राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती ,विवेकानंद ,महात्मा गांधी से लेकर आज तक जितने भी महान व्यक्तियों ने नारी उत्थान के लिए जो कुछ भी किया वह उस समय की आवश्यकता के अनुसार किया ।आज बच्चियों को बहुत सी सुविधाएँ दी जा रही हैं। कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, किरण मजूमदार शॉ,चंदा कोचर, लता मंगेशकर, मदर टेरेसा, महादेवी वर्मा, रानी लक्ष्मीबाई और अनगिनत ऐसी नारियाँ, जिन्होंने समाज में उपलब्धियाँ हासिल की, उन्होंने कभी इस चीज की माँग नहीं रखी कि उन्हें विशेष दर्जा दिया जाए ।आगे बढ़ने के लिए रास्ते उन्होंने स्वयं बनाए और कोई ताकत उन्हें आगे बढ़ने से रोक नहीं पाई । ज़रूरत सिर्फ मानसिकता बदलने की है। हे नारी तू शक्तिशाली है सक्षम है, अपनी शक्ति को पहचान और बार-बार इन चीजों की माँग मत कर, बल्कि कुछ करके दिखा दे। इसरो में वे नारियाँ ही हैं, वैज्ञानिक हैं, ब्रह्मांड ,सैटेलाइट ,और टेक्नोलॉजी पर कार्य कर रही हैं। सम्मान पा रही हैं। सम्मान कोई भीख की चीज नहीं है, यदि कोई भी नारी हो या पुरुष हो, सार्थक कार्य करेगा तो सम्मान स्वत: ही खिंचा चला आएगा । आत्मविश्वास, सौम्यता, सज्जनता, दृढ़ संकल्प के साथ जो भी आगे बढ़ेगा सफलता उसके कदम चूमेगी। नारी को ही नारी का सारथी बनना होगा, ईर्ष्या द्वेष और जलन से ऊपर उठकर काम करना होगा। कहने को अभी भी बहुत कुछ बाकी है, पर अंत में इतना ही कहूँगी, तुम हर काम में सक्षम हो, सशक्त हो, पर पारिवारिक जिम्मेदारियों से भागकर कुछ हासिल भी कर लिया तो उसका आनंद ज्यादा समय तक नहीं रह पाएगा। यदि तुम्हारा परिवेश स्वतंत्रता देता भी है तो भी परिवार और अपने काम में सामंजस्य बिठाकर आगे बढ़ती रहो।

पिंकी परुथी "अनामिका"

(कथा खण्ड)

सीख

राम के पापा का अचानक देहांत हो गया राम अभी इतना बड़ा भी नहीं था की घर की जिम्मेदारीयाँ उठा सके उससे छोटी दो बहने भी थी पिता की अचानक मौत से सारा घर शोक में डूबा हुआ था माँ का रो रो के बुरा हाल था तो बहने भी सम्भाले नहीं संभल रही थी ऐसे में बीस वर्षीय राम ने बड़ी समझदारी से माँ और बहनों को हिम्मत दी राम के पिता का अंतिम संस्कार हुआ राम के पिता का भी पूरा परिवार शामिल हुआ पर रम के पिता चार भाई थे सभी लोग धीरे धीरे बातें कर रहे थे अब इनकी ज़िम्मेदारी कौन लेगा राम के चाचा ने कहा मैं तो ख़ुद अपना घर जैसे तैसे चला रहा हूँ ऊपर से भाई की दो दो कुँवारी लड़कियाँ मैं तो इनकी ज़िम्मेदारी नहीं ले पाऊँगा बड़े भाई ने कहा मैं भी कुछ नहीं कर पाऊँगा ये वही लोग थे जो कभी राम के पिता के आगे पीछे घूमा करते थे राम सब कुछ सुन रहा था उसे उसके पिता की मृत्यु ने बहुत कुछ सिखा दिया था वो समझ गया था कि ये सारे रिश्ते नाते सब दिखावा मात्र है जिस भाई ने अपनों के लिए सब कुछ किया आज उसकी ही मृत्यु के बाद उसके परिवार के साथ कोई खड़े नहीं हो पा रहे थे राम को इतनी छोटी सी उम्र में सीख मिल गई की कौन अपना है और कौन पराया उसने स्वयं परिवार की ज़िम्मेदारी उठाई। किसी ने सही कहा है *सुख के सब साथी दुःख में न कोई*

अदिति रूसिया

ताजगी

अपना कल लता ने पति और बच्चों के लिए समर्पित कर दिया था। उसकी दुनिया जैसे इन्हीं के इर्द-गिर्द सिमट कर रह गई थी। जब लम्बी बीमारी ने पति को उससे छीना तब भी वह मजबूती से खड़ी रही और बच्चों को भी संभाला। पढ़ाई-लिखाई से लेकर उनके पैरों पर खड़े होने तक अपना आराम तक नहीं देखा।

दोनों बच्चों के विवाह उन्होंने जहाँ चाहे वहाँ खुशी-खुशी किए। अपने-अपने परिवारों-बच्चों में दोनों इस कदर मगन हुए कि अपनी माँ तक को भूल गए। घर में काम करने के लिए माँ, बच्चों को संभालने के लिए माँ, आय-गए मेहमानों के लिए चाय-खाना बनाने के लिए माँ, घर के अंदर घुटने के लिए माँ.... और घूमने-फिरने, आराम करने, खाने का आनंद लेने के लिए बेटा, बहू और बच्चे! उनकी दुनिया में माँ तो कहीं थी ही नहीं।वह तो काम वाली बाई से भी गई-गुजरी हो गई जिसे एक दिन की छुट्टी नहीं।

नहीं, वह अपना आने वाला कल इन पर कुर्बान नहीं करेगी। अपनी पड़ोसिन के यहाँ काम करने वाली को बुला कर उसने झाड़ू-पौंछा, बर्तन का स्वयं तय किया, एक खाना बनाने वाला रखा। बेटे-बहू को इस बारे में बता कर कहा कि दोनों की तनख़्वाह वे ही देंगे।

अब लता पूर्णतया निश्चिंत थी।उसने तय कर लिया था कि आने वाला कल उसके द्वार पर दस्तक दे रहा है , उसे कैसे अपने लिए सँवारना है। आज सुबह बालकनी में बैठ कर चाय पीते हुए उदित होते सूर्य को देखना उसे एक नई ताजगी दे रहा था।

डा० भारती वर्मा बौड़ाई

बेस्ट सास (व्यंग्य कथा)

आखिर मैं पिछले साल बहु से सास बन ही गयी...लड़का जो पैदा किया था मैंने!

मेरे बेटे सारांश की शादी सुहानी से हो गयी, पढ़ी लिखी उच्च पद पर कार्यरत बहु मिलने से सारे मुहल्ले में हमारे घर के ही चर्चे थे।

समय का पहिया घूमा और वो सारे सुख प्राप्त हुए जो अब तक सिर्फ मेरी सास को प्राप्त थे। सुबह बहु के हाथ की चाय मिलने लगी ।खाना बनाना घर की साफ सफाई सब करके ही बहु आफिस जाती थी... अरे! आप भौंहें क्यों तान रहे हैं? ये सब बहू के ही तो काम हैं ना!

मायके से जो मिलता उस पर मेरा अधिकार ही रहता,क्योंकि इधर उधर के रिश्तेदारों से व्यवहार तो मुझे ही निभाना था।

दोनों बेटा बहू के वेतन पर भी मेरा ही अधिकार था। अब उन्हें कहां आता है घर गृहस्थी चलाना, मैं बेटे की मां हूं, मुझे ही देखना पड़ेगा ना कि बच्चे घूमने फिरने के नाम पर फिजूलखर्ची ना करें। बहू को भी हिदायत दे दी है कि कहीं जाना हो तो मुझसे पूछ के, ऑटो का किराया लेकर ही जाए।

बहु अपने घर की इकलौती बिटिया है, घर के काम ज्यादा नहीं आते थे ,खाना ,नाश्ता कभी खराब बन जाता तो उसे सिखाती। उसकी प्रैक्टिस कराने को ज़्यादातर किट्टी का आयोजन मैं अपने ही घर पर करती हूं। समाज में बहू का भी तो नाम बनाना पड़ेगा... आखिर उसका ख्याल भी तो मुझे ही रखना था।

शाम को आफिस से आकर आराम करती तो मुझे ही बाप बेटे को बताना पड़ता कि आज चाय थोड़ी देर से मिलेगी, सुहानी आराम कर रही है। बनाने को तो मैं भी चाय बना दूं पर मुझे ना, उसके हाथ की चाय की आदत पड़ चुकी है।

नारी सशक्तीकरण के चलते उसे कभी कमजोर नहीं होने दिया.... झुंझलाहट में अगर कभी सुहानी रो भी दे तो बनावटी आँसू कहने पर चुप हो जाती है। आखिर मुझे ही तो उसे मजबूत बनाना है!

मेरे इतने सहयोगी रवैये के कारण ही मुहल्ले की सारी सासों में मेरी धाक बन गयी है। इस बार की किट्टी में तो मेरा बेस्ट सास का पुरस्कार पक्का है!!

सविता गुप्ता

नई सोच

आज सुबह से ही नंदिनी का मन बहुत बैचेन था।

नंदिनी और नंदू जुड़वां भाई- बहिन। नंदिनी बचपन से ही पढ़ाई में अव्वल और नंदू बिलकुल इससे उल्टा उसका मन पढ़ाई में ज्यादा नहीं लगता।दोनों भाई -बहिनों ने गाँव से ही बारहवीं पास कर ली।आगे की पढ़ाई के लिए बाबूजी ने नंदू को तो आसानी से शहर में भेज दिया।किंतु नंदिनी को बड़ी मुश्किल से। शहर में दोनों एक जान -पहचान के चाचा जी के घर रहने लगे। घर के बाजू में एक प्रौढ़ शिक्षा केंद्र था।वहाँ एक बड़ी बहनजी आया करतीं थीं और सब शिक्षिकाओं को प्रशिक्षण देने।उनको देखकर नंदिनी सोचती - मैं भी खूब पढ़ाई करुँगी और एक दिन ऐसी ही कोई बड़ी बहनजी बनूँगी।

आज स्नातक की परीक्षा का परिणाम आया नंदिनी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई थी। ख़ुशी से फूली न समा रही थी। घर आकर नंदिनी ने ख़ुशी ख़ुशी माँ को फ़ोन पर जानकारी दी। किन्तु रात में माँ का अचानक फोन आया ,कहने लगीं- "नंदिनी अब तुम वापस आ जाओ।तुम्हारे बाबूजी कह रहे अब आगे की पढ़ाई में खर्चा बहुत है।तुम्हें तो ससुराल जाना है। नंदू को वहीँ पढ़ने दो।" सुनकर नंदिनी के पैरों की जमीं मानों खिसकने लगी।

उसने कहा माँ, बाबूजी मेरी जगह नंदू को भी तो वापस बुला सकते हैं,उसका तो पढ़ाई में मन भी नहीं लगता और वह गाँव में ही बाबूजी के साथ दुकान में ही काम कर सकता है।सुनकर माँ चुप रह गई।

नंदिनी समझ रही थी कि माँ भी बेबस और मजबूर है।बाबूजी के सामने उनकी नहीं चलने वाली। वह आगे चलकर एक बड़ी अफसर बनकर बाबूजी की सोच को बदलने की सोचा करती थी,किन्तु माँ की बातों ने उसे चिंता में डाल दिया। रात भर सो भी न पाई।

खूब सोचा और तय किया कि वह यहीं कोई पढ़ाने का काम करके अपनी आगे की पढ़ाई जारी रखेगी।सुबह नंदिनी के कदम अपने आप प्रौढ़ शिक्षा केंद्र की ओर बढ़े जा रहे थे एक नयी सोच,एक नए उद्देश्य के साथ"।

साधना छिरोल्या, दमोह (म.प्र.)

अधिकार

श्रीमती अपर्णा गर्ग
बिजनौर (यू.पी.)

बहुत खुश होगें भैया, मुझे रक्षाबंधन पर घर में देखकर, माँ की आँखों की चमक, उनका हँसता हुआ चेहरा, सोच-सोचकर मीता बहुत उत्साहित हो रही थी, उसके सोचने की गति ट्रेन से भी तेज दौड़ने लगी।

अचानक ट्रेन रूकी तो मीता के सोचने की रफ्तार पर भी विराम लग गया..... अरे! स्टेषन भी आ गया, मैं तो सोचती ही रह गयी।

घर पहुँचकर डोर-बेल बजाने से पहले मीता ने सोचा, क्यूं ना एक खेल खेला जाये, भैया को फोन करके पूछती हूँ कि मेरी राखी मिल गयी या नहीं, फिर अचानक से घर पहुँच कर सबको चकित कर दूँगी।

हैलो भैया..... मैं, मीता....

हाँ मीता, कैसी है तू,

सब ठीक, आपको मेरी राखी मिल गयी क्या, हाँ...हाँ, वो तो दो दिन पहले ही मिल गयी थी अच्छा, पर मैंने तो राखी भेजी ही नहीं, ''कहकर मीता फोन पर ही खिलखिलाकर हँस पड़ी।'' अरे, वो पिछले साल वाली, तेरी भाभी को कल ही अलमारी में रखी मिली, ''भैया एकदम से सकपका कर बोले।

अरे छोडो आप.... मैं कल राखी पर घर आ रही हूँ, आप समय पर स्टेषन आ जाना। अरे... प्रोग्राम बनाने से पहले पूछना तो चाहिए था ना, मैं तो कम्पनी के काम से हैदराबाद हूँ और तेरी भाभी मायके गई हुई है।

अच्छा, फिर माँ कहाँ है?

माँ को तो अनु अपने साथ ले गयी है, बीमार है ना, तो उन्हें अकेला भी नहीं छोड़ सकते।

हाँ, वो तो ठीक है, कहते हुए मीता का चेहरा लटक गया। सारी खुषी पलभर में काफूर हो गयी, अब क्या करूँगी.... घर पर तो कोई नहीं है, मुझे भी बहुत सरप्राईज देने की सूझ रही थी, अब भुगतो, सरप्राईज पर सरप्राईज का मजा.... बच्चों ने कितना मना किया था, शनिवार और रविवार की छुट्टी है, आगरा घूमने चलते है, पर मैं ही नहीं मानी, जाने क्या सनक सवार हो गयी थी।

मीता अपने विचारों में खोयी हुई थी कि अचानक उसे भैया की आवाज सुनायी दी, वो स्कूटर पर बैठे हुए थे और भाभी से कुछ पूछ रहे थे,..

भैया-भाभी, तो यहीं पर है, फिर उन्होंने मुझसे झूठ क्यूं बोला, कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं....

मीता जैसे ही समान उठाकर दरवाजे तक पहुँची, भैया जा चुके थे।

मीता ने डोर-बेल बजायी, भाभी ने दरवाजा खोला,

दीदी आप.... अचानक कैसे आना हुआ, कोई फोन भी नहीं किया आपने, ये ले आते आपको स्टेषन से....

रूको तो सही, बताती हुँ सब कुछ, प्रोग्राम तो मेरा कल आने का था, पर आपको सरप्राईज देने के लिये बिना बताये आज ही आ गयी, भैया कहीं गये है क्या....

हाँ, अभी-अभी ऑफिस गये हैं।

शायद आप भी मायके जाने वाली थी....

हाँ..हाँ, प्रोग्राम तो था, पर माँजी की तबियत अचानक से खराब हो गयी इसीलिये घर जाना कैंसिल करना पड़ा, ''अनीता की समझ में नहीं आया कि मीता ऐसे क्यूँ पूछ रही है, उसने भी ऐसे ही हाँ में हाँ मिलाकर बात बना दी।''

अच्छा भाभी, मैं अब माँ से मिल लेती हूँ, आप प्लीज एक कप चाय बना दो, ''कहती हुई मीता, माँ के कमरे की ओर मुड़ गयी।''

ये क्या....माँ के कमरे से कितनी बदबु आ रही है, झूठे बरतन भी ऐसे ही पड़े है और माँ ने साड़ी भी नहीं पहनी ये हो क्या रहा है यहाँ पर..... मीता ने भाभी को आवाज दी।

भाभी ये क्या..... कुछ साफ-सफाई नहीं, और माँ ने साड़ी क्यूँ नहीं पहनी हैं,

कुछ नहीं दीदी, वो काम करने वाली दो दिन से नहीं आयी और मुझे भी काम से फुर्सत नहीं मिली,'' अनीता एकदम से सफेद झूठ बोल गयी।''

काम से फुर्सत नहीं, घर में तीन लोग रहते है, बच्चे बाहर पढ़ने गये है, फिर काम ही क्या है.....

''बाद में बात करती हूँ, पहले माँ को देख लूँ, सोचती हुई मीता कमरे में चली गयी।''

पुनः डोर-बेल बजती है... अब कौन आ गया, ''बडबडाती हुई अनीता दरवाजा खोलने चली गयी।''

अब....क्या हुआ? वापस क्यूँ लौट आये.....

बड़ी गड़बड़ हो गयी, सुबह मीता का फोन आया था, वो कल यहाँ आने को कह रही थी, मैंने कह दिया कि मैं तो कम्पनी के काम से हैदराबाद गया हूँ और तुम भी माँ को लेकर मायके गयी हो। कही वो तुम्हारे मोबाइल पर फोन करके माँ के बारे में पूछने लगी और तुमने कुछ अलग कह दिया तो सब झूठ पकड़ा जायेगा.....

अब कुछ नहीं हो सकता..... झूठ भी पकड़ा गया और सफाई देने की भी कोई जरूरत नहीं रह गयी, दीदी आज ही आ गयी हैं। जाने से पहले बताकर जाना चाहिये था ना, तभी मैं कहूँ, दीदी आज इतनी पूछताछ क्यूँ कर रही है?

क्या मीता आ गयी, पर वो तो कल आने वाली थी?

हाँ भैया, मेरा प्रोग्राम तो कल ही था आने का, सोचा आपको सरप्राईज दूंगी, पर यहाँ तो आप दोनों ने ही मुझे सरप्राई दे दिया, है ना भैया.....भैया नमस्ते, ''कहती हुई मीता मुस्कुरा दी।''

तू कब आयी, कह देती तो मैं ही स्टेषन आ जाता... वो पर्स भूल गया था, रास्ते में याद आया, वहीं लेने आया हूँ। अच्छा, तो ठीक है, ष्षाम को मिलते है, ''बातों को गोल-गोल घुमाकर भैया तुरंत रफूचक्कर हो गये, भाभी भी अपने काम में लग गयी।''

थोड़ी देर बाद भाभी मैं बाजार जा रही हूँ माँ की दवाईयाँ खत्म हो गयी है, आपको कुछ मँगवाना है, नही दीदी, बस शाम को आप जो सब्जी पसंद करे लेती आना, ''अनीता ने रसोई से ही जवाब दिया।''

आठ बज गये, भैया अभी तक घर नहीं आये, कहीं सुबह की बात से परेशान तो नहीं, जब वो आयेंगे तो मैं इस विषय पर कोई बात नहीं करूंगी,'' मीता फिर सोचने लगी।''

थोड़ी देर बाद भैया आये, और आते ही कमरे में घुस गये, शायद मुझसे नजरें मिलाने की हिमत नहीं जुटा पा रहें, बेकार बात आगे बढ़े, इसलिये मुझे भी चुप रहना चाहिये, अगर वे ही शुरूआत करें तो ज्यादा अच्छा रहेगा, माँ की दवाई का समय हो गया हैं.....।

नींद आँखों से कोसों दूर थी, मन में एक अलग ही तरह की बैचेनी थी, अगर भैया कुछ देर बात कर लेते तो अच्छा रहता, भाभी भी सारे दिन कटी-कटी सी रही, मैं भी तो अनमनी रहीं, मैं भी तो बात कर सकती थी, इसी ऊहापोह में काफी समय बीत गया....

प्यास लग रही हैं, पानी पीकर आती हूँ, शायद नींद आ जायें, गीता किचन में गयी तो देखा भैया के कमरे की लाईट जल रहीं थी, दोनों अभी तक सोये नहीं। अपने कमरे की ओर मुड़ी ही थी कि भाभी के बोलने की आवाज सुनायी दी....।

आपने थोड़ा सा झूठ बोल दिया तो कोनसा पहाड़ टूट पड़ा, दीदी तो घर आ गयी ना अब क्या फर्क पड़ता है कि तब आपने क्या कहा था - आज तो बस हर बार अपने आप कोसते रहा करो, और वहाँ गाँव में आपका छोटा भाई मौज कर रहा है, ना तो खेती की

आमदनी मैं कोई हिस्सा और ना ही बीमार माँ की जिम्मेदारी... बस कह दिया- भैया, आप तो जानते ही हैं ना, गाँव में ना तो कोई हाँस्पिटल है और ना कोई अच्छा डॉक्टर, आने-जाने का साधन भी नहीं है, अब आप ही बताओ, मैं माँ का इलाज कैसे करवाऊँ, और जी छोड़ गये माँ से हमारे पास और सब जिम्मेदारियों से हाथ जोड़ लिये... आप तब भी चुप रहे, कुछ ना बोले,

अरी भागवान, अब तो चुप हो जा, बहुत रात हो चली है, कहीं मीता न सुन लें, वैसे भी सुबह-सुबह फजीहत हो चुकी है, "आलोक ने अनीता को समझाने की कोशिश की।"

सारा प्रकरण मीता की समझ में आ गया था, दोनों भाईयों के स्वार्थ की वजह से माँ दो पाटों में पिस रहीं हैं, अब वह माँ को यहाँ नहीं रहने देगी, उन्हें अपने साथ घर ले जायेगी," मीता ने मन ही मन फैसला कर लिया, निकल उसे क्या करना है।"

अगले दिन, भैया को राखी बाँधते समय मीता कहने लगी," भैया में माँ को हमेशा के लिए अपने साथ ले जाना चाहती हूँ। आप माँ का रिर्जवेशन करवा दो।

कल की बात का बुरा मान गयी क्या, "हकलाते हुए आलोक ने कहा"।

नहीं भैया, ऐसा नहीं है, कल रात मैंने आपकी और भाभी की बात सुन ली थी, भाभी सहीं कह रही है, हम तीनों एक ही माँ की संतान है, जब उन्होंने हमें जन्म देने में बराबर और हमारी परवरिश में भी कभी भेदभाव नहीं किया को दुखः सहा है तो सिर्फ ही क्यूं उनका दायित्व संभालें, मुझे भी तो माँ की सेवा का मौका मिलना चाहिये। क्या सिर्फ शादी हो जाने से मुझे अपनी जिम्मेदारियों से नियुक्त हो जाना चाहिये। हम सब इक्कीसवीं सदी की ओर बढ़ रहे हैं पर हमारी सोच वहीं अट्ठारहवीं सदी तक आकर ठहर गयी है। बेटी पराया धन होती है, बेटी के घर का पानी भी नहीं पीना, इन सबका अब कोई औचित्य नहीं रह जाता... माँ को भी समझाना पड़ेगा, इसमें आप भी मेरा साथ देना।

पर मीना लोग क्या कहेंगे, तूने अभिताभ जी से पूछ लिया, अगर उन्होंने मना कर दिया तो "आलोक ने बात को पलटने की कोशिश की।

यह तो भैया सब कहने की बात हैं कि लोग क्या कहेगें? उससे पहले तो व्यक्ति का अपना जमीर होता है, कहने की बात नहीं है यदि आप इकलोते होते तो भी क्या माँ का सांझा करते, माँ कोई वस्तु नहीं है, जिसकी भावनाओं को बाँटा जाये, काश, आपने लोगों से ज्यादा माँ का ख्याल किया होता तो अच्छा रहता।

खैर जाने दीजिये, इन बातों को.. और रही इसकी बात, तो क्यूं मना करेगें वो, मैं आज की दुनिया की सशक्त नारी हूँ और अपने लिये निर्णय लेने की क्षमता है मुझमें, जैसे मैं इनके माता-पिता की सेवा करती हूँ क्या वो मुझे अपनी माँ का ख्याल रखने का अधिकार नहीं देगें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वे मेरी भावनाओं को सम्मान करेंगे।

बहुत हो चुका.... माँ-बाप की शादी के बाद बेटी के घर नहीं रह सकते, कब तक हम इन कुरीतियों को सहेजतें रहेंगे। जब हम नयी सोच के साथ जिन्दगी जीना चाहती है ते रीति-रिवाज भी नये होने चाहिये। एक तरफ तो हम बेटा-बेटी एक समान का नारा लगाते है। और जब अधिकार एवं जिम्मेदारियों की बात आती है, तो हम बेटियों से पीछे कर दिया जाता है। आखिर कब तक हमें अपनी जिम्मेदारियों से दूर करके "पराया धन"से परिभाषित करते रहेंगे। बदलते वक्त के साथ हमें आगे बढ़कर आप लोगों के साथ कदम मिलाने होंगे, तभी हम अपने आपको एक-समान महसूस करेगें। मीता की आँखों की चमक बता रही थी कि वो अपने फैसले पर अड़िग रहेगी।"

परिचर्चा

क्या महिला दिवस मनाना आवश्यक है?

महिला और पुरुष एक सिक्के के दो पहलू हैं पर पंत जी के शब्दों में-

"सारी दुविधाएं हैं नारी को लेकर। अपने लिए सारी सुविधाएं पहले ही कर बैठे नर"

तब भले एक दिन के लिए महिला दिवस आवश्यक हो जाता है। नारी उदार है पूरे दिन काम करती है सबको खुश रखने के चक्कर में उसके पास अपने लिए समय ही नहीं होता। पर कहुं किसी भी नारी से पूछो तुम रसोई में खुश हो। गरमी नहीं लगती तुम्हें। नहीं ये खाना मेरे पति खायेंगे, बच्चे खायेंगे मेरे सास ससूर खायेंगे। उनको स्वस्थ रखना मेरी नैतिक जिम्मेदारी है।ये भारतीय नारी है। सुबह पांच बजे से स्नान करके रसोई में जाना और रात दस बजे बिस्तर पर जाना ये उसकी पहचान है। विदेशों में भी मैंने पाया बाजार भी नारी ही करती है इसलिए एक दिन अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है।

नारी तुम श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पद तल में
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के समतल में।

डॉ. राजलक्ष्मी शिवहरे

संसार की आधी आबादी को किसी विशेष दिवस की आवश्यकता नहीं है , जरूरत है बराबरी के अधिकार और सम्मान की, लिंग भेद को आधार बना होने वाले गलत व्यवहार को रोकने और बराबरी के अवसर मिलने की आवश्कता है, नारी सृजन कर्ता है, जो रचता है, रक्त से नवांकुर को पोषित करता है, वो कितना मजबूत है ये किसी को समझाने की आवश्यकता नहीं है, अपने आप में प्रकृति ही सबूत दे देती है,..पर उसी नजाकत का जब कुछ सिरफिरे गलत फायदा उठाते है और देह जन्य सारे विधान महिला के खिलाफ हो जाते है तो अक्रोश पनपता है जो विधवंस रचता है, जो परिणाम मात्र है भेदभाव का संदर्भ यही है कि महिला दिवस या विशेष दिवस की जगह बराबरी के अधिकार और अवसर मिलना चाहिये, यही उचित है समाज को बदला जाये।

नमिता दुबे

यह सच है कि जीवन और संसार महिला और पुरुष से बनते है।एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं है। यह अकाट्य सत्य है। किसी एक को महत्वपूर्ण कहना एक निराधार बहस है।

प्रश्न यह है कि महिला दिवस उचित है या अनुचित ,यह प्रश्न नही एक विचार है।

महिला दिवस मनाने या मनाने से महिला के अस्तित्व पर कोई प्रभाव नही पड़ता,पर हाँ एक विशेष दिवस पर उसके अस्तित्व पर उसके अस्तित्व पर बधाई देना एक अच्छा विचार है।

सामान्य जीवन चक्र में एक उत्सव सा।

शिल्पा पाठक

महिला दिवस,...आज हर चीज का दिन निर्धारित कर दिया गया ये दिन का निर्धारण मांव की उत्सवधर्मिता का प्रतीत है कुछ दिवस हम पहले से मनाते आ रहे है और कुछ दिवस विदेशी संस्कृति से आकर हमारे बीच घुलमिल गये । बात महिला दिवस की है तो यही कहूंगा जरुर मनाया जाना चाहिए ये मातृशक्ति के रूप में मनाया जाये हर शहर में महिलाओं के विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम हो जिसकी सारी व्यवस्था पुरुष करे इस दिन घर के सभी कामों से मातृशक्ति मुक्त रहे उन्हें घूमने-फिरने पिकनिक पर जाने और घर में भी सहेलियों को बुलाकर गेदरिंग की छूट मिले और इन सभी कार्यों में परिवार की सहमति,सहभागिता और सहयोग हो । इस दिवस का ये मतलब कतई न लगाया जाये कि क्या एक दिन दिवस मनाने से नारी उत्थान हो जायेगा जिस तरह एक दिन दिवाली मनाने से रामराज्य नही आता लेकिन जीवन में उत्साह और उमंग का संचार हो जाता है मेहमान आते है एक दूसरे से मिलना जुलना होता एक दूसरे को पकवान खिलाये जाते वही महत्व महिला दिवस का है इस एक दिन महिलाएं उत्सव मनाकर अपने व्यस्त जीवन में उल्लास का अनुभव करे उनके महत्व को रेखांकित किया जाये उनको स्पेशल होने का अहसास कराया जाये यही उद्देश्य महिला दिवस का होना चाहिए ।

नवीन जैन अकेला

मेरे विचार से महिला दिवस मनाना एक दम आवश्यक एवं सार्थक है।
इस लिये नहीं कि, महिलाओं को अपने आप को पुरूषों के समक्ष उनके बराबर साबित करना है, ऐसा सोचना तो महिलाओं के साथ, परिवार एवं समाज के लिये किये गये उनके कार्यों का उनके व्यक्तिगत त्यागों का अवमूल्यन करना होगा।

मुझे कभी नहीं लगा, और आज भी नहीं लगता कि, स्त्रियों को पुरूषों से बराबरी करनी चाहिये, क्योंकि शारीरिक एवं मानसिक दोनो ही रूपों में प्रकृति ने उनकी रचना ही एक दूसरे के पूरक के रूप में की है, प्रतिद्वन्दी नहीं। एक दूसरे का सहारा एवं प्रेरणा बन कर ही मानव जीवन सुखी एवं परिपूर्ण होता है। किन्तु जीवन है, मनुष्य मन की अज्ञानतायें हैं, तो गलतियां भी होती ही रहती है,और भोगना भी दोनो को ही पड़ता है।

शारीरिक बल और सामाजिक ब्यवस्था के कारण भले ही पुरूष अपना वर्चस्व माने, किन्तु सच तो यही है कि महिलाओं ने हर क्षेत्र में यहां तक कि जिसे केवल पुरूषों के लिये सुरक्षित माना जाता था, वहां भी साहस एवं सफलता के अपने कदम गाड़ दिये हैं। शारीरिक संरचना या मानसिकता भी अब उनके सामने नहीं टिकती। महिलायें हमेशा से सबल, सजग और सक्षम थी,और अब तोऔरअधिक हो गयी हैं।आवश्यकता है उनके अपने आत्मवल को पहचानने की।

इस लिये आज महिला दिवस मनाने की और अधिक आवश्यकता है, और आवश्यक है महिलाओं की उपलब्धियों को घर-घर, गांव -गांव तक पहुंचाने की, जो पहुंच भी रही है । महिला दिवस मनाने की सार्थकता तभी सिद्ध होगी जब केवल शहर ही नही, गांव के घर -घर में इसे एक त्यौहार की तरह मनाया जाय, और वह दिन अब दूर नहीं ।

माधुरी मिश्रा,जबलपुर

वैसे तो भारत में नारी दिवस मनाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हमारे देश में रोज ही नारी दिन ही होता है क्योंकि सुबह से लेकर शाम और फिर रात तक। पुरुषों और घर परिवार और बच्चों के लिए, हर कार्य के लिए नारी की आवश्यकता होती है छोटे बड़े हर कार्य के लिए यानि की घर के हर काम नारी से ही शुरू होकर उसी पर खत्म होते हैं। वैसे तो नारी दिवस मनाने का कोई औचित्य नहीं है पर कितने ही कारण ऐसे हैं जिनके चलते आवश्यक है इस दिन को मनाने की।

पहले घर के कामों के बाद वह कृषि प्रधान देश होने के कारण उसमें भी अपना हाथ बताती थी और आज आधुनिक युग में भी घर के साथ - साथ बाहर भी कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है, कितनी ही नारियां घर के साथ बाहर की भी बागडोर संभाल रहीं हैं और आर्थिक सहयोग अपने परिवार को प्रदान कर रहीं हैं पर शायद इसका श्रेय उसको मिल नहीं रहा है अपितु इसके प्रतिफल के एवज में उसे नकारात्मक दृष्टि से देखा जाता है, वह कितनी ही अच्छी तरह अपनी जिम्मेदारियों को निभाये उसकी तुलना में उसे उसका प्रतिफल नहीं मिला या मिलता कभी, जो मिलना चाहिए। और ऊपर से शारीरिक पूर्ति का साधन मानकर और शारीरिक रूप से कमजोर समझ कर कमज़ोर, नाजुक कहकर उसका लाभ उठाया जाता है क ई क्षेत्रों में नारियों ने आगे बढ़कर अपने हौंसले से अपना नाम बढ़ाया है, परन्तु आधी आबादी के बाद भी अभी बहुत कम प्रतिशत है भारत में और नारियों की स्थिति अभी भी अधिकतर वही है जैसे पहले थी वह पुरुषों जितना पढ़ लिख भी रही है हर क्षेत्र में आगे बढ़ कर अपना कीर्तिमान स्थापित कर रही है पर फिर भी किसी न किसी रूप में में वह प्रताड़ित भी की जा रही है घर नहीं तो बाहर सभी जगह पर शारीरिक भोग की वस्तु मानकर और शारीरिक रूप से कमजोर मानकर अब भी वह प्रताड़ित हो रही है और यह हालत सिर्फ अनपढ़ या ग्रामीण क्षेत्रों में ही नहीं वरन पढ़े-लिखे शहरी क्षेत्रों में भी देखने को मिलती है और ऐसे में नारियों की सुरक्षा आवश्यक हो गई है, तो ऐसे में नारी दिन मनाना आवश्यक है - - एक दिन ही सही पुरुषों की अगर उनके प्रति भावनाएँ परिवर्तित होतीं हैं और उस एक दिन भी अगर वह अपना आत्मसम्मान बरकरार रख सकती है तो अवश्य ही मनाना चाहिए__# नारी दिवस।

किरण मोर कटनी म.प्र.

समाज में जीवन मूल्यों का अत्याधिक महत्व है। जीवन मूल्य परस्पर प्रेम ,सहयोग और प्रगति का आधार हैं। जब भी हम मानवीयता की चर्चा करते हैं तब करुणा , दया , शांति और क्षमा जैसे भाव चित्रित होने लगते हैं। भारतवर्ष में अनगिनत ऐसे महापुरुष हुए जिनके जीवन चरित्र ऐसे जीवन मूल्यों से शृंगारित हैं।

माता-पिता , गुरु और आसपास का परिवेश हमें सीखने हेतु वातावरण प्रदान करता रहा है। भारतीय आध्यत्म ने हमें नैतिक मूल्यों में संपन्न बनाया है ; लेकिन शनैः शनैः हम औपचारिकऔर प्रदर्शनी की वस्तु बनते जा रहे हैं। वर्तमान में जब हम धैर्य ,त्याग और परमार्थ की पूँजी खोते जा रहे हैं तब उनकी प्रतिपूर्ति हेतु प्रेरणा की महती आवश्यकता है। यह प्रेरणा हमें धार्मिक , शैक्षिक और ऐतिहासिक प्रासंगिक प्रवचनों ,परिचर्चाओं और साहित्य सृजन से मिल सकती है। यह सभी आयोजन के बिना संभव नहीं है।

महापुरूषों की जयन्तियां और समसामयिक मूल्यों की स्थापना हेतु मनाए जाने वाले दिवस हमें कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों का स्मरण दिलाते हैं। महिलाओं का समाज में सम्मान और उनके अधिकारों के प्रति सचेत

करने का दिवस है महिला दिवस।आज भौतिकता के युग में नारी के प्रति संकुचित विचारों को मिटाने की बहुत आवश्यकता है।महिलाओं की स्वतंत्रता और उनकी समानता हेतु मानसिकता में परिवर्तन अपेक्षित है। महिलाओं की सुरक्षा का विषय इस समय सर्वोपरि है। संविधान तब तक कुछ समाधान नहीं दे सकेगा ,जब तक हमारी सोच में परिपक्वता नहीं आ जाती। आवश्यकता है कि महिला दिवस स्वागत और फूल मालाओं का उत्सव बन के न रह जाये। जागरूकता का विचार इस मनोवैज्ञानिकता के साथ जन जन के मन में उतरे की नारी की महत्ता और उसकी समाज में उपादेयता स्वयं सिद्ध हो सके। जो लोग या जो संस्थाएँ महिलाओं के लिए कार्य कर रहीं हैं वे तो अभिनंदनीय हैं ही उनके साथ जो इस तरफ कभी सोचते ही नहीं उनके लिए महिला दिवस एक अवसर है कि वे महिलाओं के प्रति समाज की मानसिकता बदलने में सहयोग करें। महिला दिवस का औचित्य भी यही है कि इस दिवस के बहाने अपने मनःपटल पर सभी वीरांगनाओं, सभी कर्मयोगिनियों और सभी उन दिव्य आत्माओं के बिम्ब उभर आएँ जिनसे यह देश भारत माँ का देश लगने लगे।

प्रदीप सोनी 'शून्य'

क्या महिला दिवस मनाना आवश्यक है ....मैं कहूंगी हाँ । आप कहेंगे क्यो? मेरा प्रश्न होगा उत्तर के रूप में कि जैसे गणतंत्र दिवस,मात्र दिवस अन्य दिवस आवश्यक है ।वैसे ही यह भी आवश्यक है ।आप विचार करे क्या जन्म दिन मनाना जरूरी है ।नही है न पर है क्योकि यह छोटे छोटे दिवस ही हमे खुशी मनाने का कारण देते है ।जरूरी नही पहले क्या यह सब दिवस थे नही थे ।नारी की आदिकाल में यह स्थिति रही होगी कि उसे कभी यह भी पता नही होगा कि उसका जन्मदिन कव होता होगा।आज नारी की स्थिति में सुधार हुआ उसे सम्मान मिला बराबरी का हक दिया गया।कुछ मसलों को छोड़कर तो फिर उसके लिए यदि एक दिवस निर्धारित करके उसे सम्मान देना इसी बहाने अन्य वर्गों में उसके गुणों की चर्चा होना होता है तो इसमे नुकसान कही नही वरन नारी को ऊर्जा मिलती है वो अपने आप को गौरवान्वित महसूस करती है ।क्योकी दिवस या जयंती उन्ही की मनाई जातो है जिनमे कोई विशेष बात होती है ।नारी सृष्टि का आदि है जननी है इस भूमि का आधार है वो ही नर को व नारी को जन्म देती है ।उसके लिए एक दिवस नही हर दिवस समर्पित किये जायें तो भी कम है वो माँ के रूप में जननी है तो पालन करती हुई अन्नपूर्णा के रूप में भी है बही बहन के रूप में दादी नानी काकी सारे रिश्तों की आधारभूत है ।महिला ही है जिसके कारण मकान घर बनता है महिला ही है जिसके कारण वंश व्रद्धि होती है ।महिला ही है जिसके कारण रिश्तों में मिठास आती है।महिला ही तो है जिसके सौजन्य से परिवार के पुरुष पुरुषतत्व क़ायम रखते है ।या यूं कहें नारी धरती पर भगवान का सबसे सुंदर सर्जन है ।उसके लिये यदि पृथ्वी वासियों ने यदि एक दिन विशेष बनाया है तो में इस दिन की प्रशसा करती हूं व इस धरा की नारी शक्ति को प्रणाम करती हूँ वंदन करती हूँ।।

बबिता चौबे शक्ति

महिला दिवस मनाया जाना मेरी द्रष्टि से परम आवश्यक है क्योंकि समाज को दिखा देना चाहिए कि हम महिलाएं किसी भी क्षेत्र मे पुरुषों से कम नहीं हैं ,हर कार्य वो बखूबी निभा रहीं हैं।फिर पुरूष प्रधान समाज क्यो महिलाओं को कम आंकता है हम तो कहते हैं कि जहाँ भी महिलाओं के सम्मान हों वहां पुरूषों को भी बुलाना चाहिए जिससे मालूम पडे कि महिला आपकी बहन ,बेटी,पत्नी का आज सम्मान किन गुणों के कारण हो रहा है ,नहीं तो घर की मुर्गी दाल बराबर ही रहती है। घर के काम काज करना ही उसकी जिन्दगी नहीं है। उसके साथ वह और भी कुछ अलग कर सकती है। थोड़ा सा प्यार ,सम्मान देकर अंदर की छुपी प्रतिभाअधिक अच्छे से सामने आ सकती हैं ।थोडा और प्रयास और सहयोग करा जाये तो....कहां से कहां पहुँच सकती है। इसलिए महिलाओं को महिलाएं ही आगे बढने में साथ दें ,चाहे हमारी काम वाली बाईयां ही क्यों न हो हम

उन्हें शिक्षा के लिये प्रेरित करे और सहयोग भी करें तो देश ,समाज और तेजी से तरक्की करेगा।

अर्चना कटारे, शहडोल(म.प्र)

जब भी हम महिलाओ की स्थिति की बात करते है ,प्रतियोगी में केवल पुरुषों को ला खड़ा करते है| जबकि हम भलीभाँति जानते है की स्त्री पुरुष प्रतियोगी नहीं ,एक दूसरे के पूरक है | दोनों के बिना सृष्टि का संचालन असंभव है| नारी का जीवन कठिन और उसकी काया भले ही कोमल है, पर वो पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर समाज में अपनी उपस्थिति दर्ज करने के लिए यथायोग्य अपना भरपूर सहयोग के साथ प्रयासरत है | अब शायद ही नारी में ऐसी कोई कमी है जो उसके बढ़ते कदमों को रोक सके| स्वयं से स्वयं के संघर्ष में अब वो अपनी कमजोरियों पर विजयी होती जा रही है | साथ ही परिवार, समाज का सहयोग नारी को मानसिक रूप से संबल भी बना रहा है | विपरीत अपवाद विरोधाभास हर क्षेत्र में है जो नज़र आता है , वो हरदम सच नहीं होता |

आज भी नारी समाज और पुरुषों की घिनौनी मानसिकता को झेल रही है| पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने के बावजूद उस पर मानसिक शारीरिक दवाब बढ़ता ही जा रहा है उसे दुनिया समाज में सम्मान मिल जाता है पर अपने ही घर में अपनों के बीच वो ना जाने कितने दंश झेल रही है एक स्त्री ही स्त्री को बल देने के बजाय उसकी प्रतिस्पर्धी बन जाती है एक नारी माँ के रूप में चाहती है की उसका बेटा श्रवणकुमार हो पर पत्नी के रूप में उसे ये बात अस्वीकार होती है

एक बेटी चाहती है कि उसका मायका हमेशा बना रहे पर वही बहु के रूप में सिर्फ अपने पति और बच्चों तक ही सीमित रहना चाहती है

कद काठी रंग रूप को लेकर नारी ही नारी को नीचा दिखाने में कसर नहीं छोड़ती मेरा ये लेख यहाँ पर नारी से नारी के व्यवहार पर प्रश्नचिन्ह खड़ा कर रहा है | पर क्या ये सच नहीं है ??की नारी पुरुषों, समाज में फैली कुरीतियों ,संकीर्ण मानसिकताओं से तब ही आज़ाद होगी जब वो खुद अपनी मानसिकता को विस्तार देगी| महिला दिवस हमे सर्वप्रथम एक दूसरे को सम्मान देने के लिए प्रेरित और गौरविंत करता है सफलता की राहे हम महिला शक्ति के लिए बाहे फैलाये कह खड़ी है सरकार हमें नए नए अवसर भी दे रही है महिलाओ में प्रतिभाओ की तनिक भी कमी नहीं है | हमारी एकता और सांमजस्य नित नये इतिहास गढ़ने के लिए सक्षम और तत्पर है| उत्साहवर्धन और नारी की पहचान, गौरव के लिए साथ ही उन्हें ख़ास बहुत ख़ास अनुभव कराने के लिए महिला दिवस मनाना आवश्यक है |

नवनीता कटकवार, बालाघाट

साक्षात्कार
एक सफल महिला प्रणीता सिंह

प्रणीता सिंह

मार्च का महीना बहुत सारी विशेषताएँ लेकर आता है। फाग की बयार, पतझड़ की आहे और यादों का मौसम। और उसी महीने में एक खास दिन अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। इसी विशेष दिन पर एक अति विशिष्ट महिला पुलिस प्रणीता सिंह से बातचीत के कुछ अंश प्रस्तुत हैं इस साक्षात्कार के माध्यम से,..!

प्रीति सुराना- प्रणीता जी आप सबसे पहले कुछ अपने बारे में बताएं।

प्रणीता सिंह- मेरा नाम प्रणीता सिंह है।

मैंने पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ से हिंदी में स्नातकोत्तर किया, साथ ही अनुवाद में एक वर्षीय डिप्लोमा कोर्स भी किया है। स्नातकोत्तर करने के बाद मां के जोर देने पर B.Ed किया। B.Ed करने के बाद शिवालिक पब्लिक स्कूल चंडीगढ़ में नौकरी मिल गई।

मेरे पिता अर्ध सैनिक बल में कार्यरत थे और मेरा बचपन सैन्य परिवेश में ही बीता। बचपन से ही सैन्य जीवन के प्रति एक अलग तरह का आकर्षण रहा। यही कारण है कि शिक्षिका के रूप में नौकरी और अच्छा वेतन मिलने के बाद भी मन कुछ और करने के लिए भटकता रहा। वर्दी का आकर्षण मुझे भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल में खींच लाया। जनवरी 1998 में मैं निरीक्षक (हिंदी अनुवादक) के पद पर इस अर्ध सैनिक बल में शामिल हुई। पिछले 21 वर्षों से मैं इसी पद पर कार्यरत हूं। मेरा कार्य भारत सरकार की राजभाषा नीति को अपने कार्यालय में लागू करवाना है।

प्रीति सुराना-आपका बचपन कैसा बीता?

प्रणीता सिंह- जैसा कि मैंने पहले भी बताया कि मेरे पिता अर्ध सैनिक बल में कार्यरत थे। उनके बार-बार तबादले के कारण हमारी पढ़ाई ठीक से नहीं हो पा रही थी। कई बार शिक्षा सत्र के बीच में ही तबादला हो जाता तो कभी ऐसी जगह तैनाती होती जहां कोई स्कूल ही न हो। इन सब से परेशान हो छठी कक्षा में मुझे हॉस्टल में डाल दिया गया। दसवीं तक की शिक्षा मैंने हॉस्टल में रहकर ही ग्रहण की जहां मेरे व्यक्तित्व का समग्र विकास हुआ।

प्रीति सुराना-कैरियर के चुनाव करने की प्रेरणा कैसे मिली और माता पिता का सहयोग और भूमिका आपके जीवन में और कैरियर में?

प्रणीता सिंह- 11 वीं के बाद की पढ़ाई मैंने चंडीगढ़ में रहकर की। माता पिता ने कभी भी यह एहसास नहीं होने दिया कि मैं लड़की हूं। मुझ पर कभी कोई पाबंदी या बंदिश नहीं लगाई गई। मैंने जब भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल में शामिल होने का निर्णय लिया तब मेरे पिता को बहुत खुशी हुई। सैन्य बलों

में कार्यरत अधिकतर व्यक्ति चाहते हैं कि उनके बच्चे भी सैन्य बल में शामिल हो देश के लिए जीने मरने की उनकी परंपरा को बनाए रखें। किंतु वे इस नौकरी की चुनौतियों से भी परिचित थे, इसलिए उन्होंने मुझे सलाह दी कि मैं अपना करियर बहुत सोच समझ कर चुनूं। लेकिन मां ने मुझे हर तरह से प्रोत्साहित किया। मैं आज जहां भी हूं वहां अपने माता- पिता के सहयोग के बिना पहुंचना मुश्किल होता।

प्रीति सुराना- आपका पारिवारिक परिचय और परिवार और कर्तव्य में सामंजस्य और परिवार के सहयोग के बारे में बताएं।

प्रणीता सिंह- 1999 में मेरा विवाह जबलपुर के डॉ हेमंत केशवाल से हुआ। मेरे पति सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्रालय में कार्यरत हैं। श्वसुर जी जवाहरलाल कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर में अध्यापन कार्य करते थे। किस्मत से शादी के बाद पति और ससुराल की ओर से भी पूरा सहयोग मिला। उन्होंने भी मुझे अपने जीवन से संबंधित हर तरह का निर्णय लेने की आजादी दी है। मेरी किसी भी सफलता पर मुझसे अधिक उन्हें गर्व होता है। सगाई के बाद मेरे पति ने मुझे कहा था कि नौकरी करने या न करने का निर्णय मेरा ही रहेगा वे इसमें कभी दखल नहीं देंगे। शादी के बाद बच्चों को पालने में कुछ परेशानी तो आई लेकिन पति और माता-पिता के सहयोग के कारण यह परेशानियां भी हल हो गईं। बच्चे बीमार हो जाते तो पति रात भर जागकर उनकी देखभाल करते। मुझे कहीं बाहर जाना होता तो बच्चों को माता-पिता संभाल लेते। बच्चे कैसे बडे हो गए पता ही नहीं चला।

प्रीति सुराना- आपने किन विपरीत परिस्थितियों का सामना किया और आज कैसा महसूस करती हैं खुद को इस जगह पाकर?

प्रणीता सिंह- हम भले ही 21वीं सदी में पहुंच गए हैं लेकिन आज भी हमारे देश में महिलाओं से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने करियर से अधिक अपने परिवार को महत्व दें। यह हम महिलाओं को तय करना है कि हम नौकरी और पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच किस तरह सामंजस्य बैठाएं। सभी की तरह हमें भी दिन के 24 घंटे ही मिलते हैं। हमें इन 24 घंटों के एक एक पल का सदुपयोग करना होता है तभी दोनों जिम्मेदारियां बखूबी निभाई जा सकती हैं। घर पर काम का बंटवारा करना बहुत जरूरी होता है। नौकरी पेशा महिलाओं को अपने बच्चों को स्वावलंबी बनाना चाहिए। बच्चे अपने कपड़ों, अपने कमरे आदि को व्यवस्थित रखने का कार्य स्वयं करें। जरूरत पड़ने पर अपने खाने लायक खाना भी बना सकें।

प्रीति सुराना-आज समाज मे महिलाओं की स्थिति के बारे में आपकी क्या राय है?

प्रणीता सिंह- महिला होने के नाते कई बार लोग आपकी क्षमताओं पर विश्वास नहीं करते। आपको बार-बार यह कह कर हतोत्साहित किया जाता है कि यह औरतों के वश की बात नहीं। मुझे भी कई बार इस तरह हतोत्साहित करने का प्रयास किया गया है लेकिन जब भी मुझसे कोई यह कहता है कि यह काम तुमसे नहीं हो पाएगा या यह काम महिलाएं नहीं कर सकतीं तो मैं वह काम करके जरूर दिखाती हूं।

प्रीति सुराना-सेना में महिलाओं के लिए माहौल कैसा है?

प्रणीता सिंह- मैं समझती हूं कि सेना महिलाओं के लिए अन्य क्षेत्रों से अधिक सुरक्षित है। सेना यानी अनुशासन। जहां अनुशासन होगा वहां महिलाओं के लिए सुरक्षा तो होगी ही। लेकिन सेना का कार्य कुछ ऐसा है कि इसमें परिवार की जिम्मेदारियों के साथ तालमेल बैठाना थोड़ा मुश्किल हो जाता है। सेना का कार्य टीम वर्क होता है इसकी एक कड़ी भी कमजोर हुई तो उसका असर पूरी टीम पर पड़ता है। कड़ा अनुशासन और समय की पाबंदी, यह दो चीजें ऐसी हैं जिनका ध्यान रखना बहुत जरूरी है। सेना में हमेशा ही आपको पारिवारिक जिम्मेदारियों की अपेक्षा व्यावसायिक जिम्मेदारियों को प्राथमिकता देनी पड़ती है। एक समय ऐसा था जब सेना में महिलाएं भर्ती नहीं की जाती थीं। लेकिन मौका मिलने पर महिलाओं ने स्वयं को सिद्ध किया है और अब देश को भी विश्वास हो गया है कि महिलाएं किसी से कम नही।

प्रीति सुराना-महिलाओं को इस क्षेत्र में किन असुविधाओं का सामना करना पड़ता है?

प्रणीता सिंह- यहां कुछ चुनौतियां ऐसी हैं जो महिलाओं के लिए कठिन प्रतीत होती हैं क्योंकि उन्हें नौकरी के साथ साथ परिवार की जिम्मेदारियां भी उठानी हैं। सेना में आपको सुबह 6:00 बजे पीटी में शामिल होना आवश्यक है। 7:30 बजे पीटी के बाद आप घर पहुंचते हैं और 9:00 बजे फिर ऑफिस के लिए निकलना होता है। कई बार अचानक किसी अन्य स्थान पर अल्पकालिक तैनाती के लिए जाना पड़ता है और कई बार कोई ऐसी ड्यूटी पर जाना पड़ता है जहां न तो रहने की व्यवस्था ठीक होती है और न ही खाने पीने की। मुझे तो सबसे मुश्किल काम लगता है हर वक्त अपने आप को शारीरिक और मानसिक रूप से फिट बनाए रखना।

प्रीति सुराना-आपके जीवन की क्या उपलब्धियाँ रही कार्यक्षेत्र में या अन्य क्षेत्रों में।

प्रणीता सिंह- कॉलेज पत्रिका की हिंदी संपादक रही। भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल में 'कोशिश' नामक पत्रिका का संपादन किया।

दिल्ली स्थित विकास पब्लिकेशन की कुछ पुस्तकों का अनुवाद किया जिसमें से एक मैनेजमेंट गुरु अरिंदम चौधरी की पुस्तक 'काउंट योर चिकन्स बिफोर दे हैच' भी है। इसके अतिरिक्त मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय की तेरह पुस्तकों का अनुवाद किया जो कि मानसिक विकलांगता से संबंधित हैं। कॉलेज जीवन से ही पत्रिकाओं आदि के लिए लिखती रही। अभी हाल ही में 'धप्पा' नामक स्कूली जीवन की यादों का संकलन प्रकाशित हुआ है जिसमें मेरा भी आलेख है।
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चंडीगढ़ से साहित्यकार सम्मान प्राप्त हुआ।

विभागीय कार्यक्रमों में कमेंट्री करती रही हूं जिसके लिए मुझे महानिदेशक प्रशंसा पत्र व प्रतीक चिह्न प्रदान किया गया।

विभाग में राजभाषा संबंधी कार्यों के लिए दो बार "भारत तिब्बत सीमा पुलिस राजभाषा चल शील्ड" विजेता रही। भोपाल स्थित केंद्रीय कार्यालयों (न.रा.का.स. क्र.-1) में राजभाषा संबंधी सर्वश्रेष्ठ

कार्य करने के लिए पिछले दो वर्ष लगातार राजभाषा चल शील्ड प्राप्त की।

प्रीति सुराना- आपके जीवन की कोई यादगार घटना?

प्रणीता सिंह- यादगार लम्हे तो बहुत से हैं जीवन में, किसे याद करूं किसी छोड़ दूं। सबका अपना-अपना महत्व है। हां, यदि किसी ऐसे लम्हे की बात करूं जिसमें मेरा कोई सपना साकार हुआ हो तो वह है मेजर जनरल जीडी बक्शी जी से हुई मुलाकात। मेजर जनरल जीडी बक्शी को जब भी टीवी पर देखती तो मन में यह ख्याल जरूर आया कि कभी उन्हें प्रत्यक्ष देखने और बात करने का मौका मिले। पिछले वर्ष 16 अगस्त को दिल्ली जाने के लिए सुबह की फ्लाइट का इंतजार कर रही थी कि पीछे से कुछ जानी पहचानी सी आवाज सुनाई दी। पलट कर देखा तो मेजर जनरल जीडी बक्शी किसी के साथ बातें कर रहे थे। भोपाल में किसी सम्मान समारोह में आए थे और दिल्ली जा रहे थे। बस मैंने मौके का फायदा उठा लिया और उनसे बातें करने की वर्षों की साध पूरी कर ली।

प्रीति सुराना- आपके जीवन मे कोई ऐसी घटना जिसने आपके इरादों को कमजोर किया हो?

प्रणीता सिंह- देखिए अच्छी और बुरी घटना सभी के जीवन में घटती हैं। अच्छी घटनाओं को सहेज कर अपने दिल में रखना चाहिए। बुरी घटनाओं से मिले सबक को छोड़ मैं उसमें कुछ भी याद रखने लायक नहीं समझती। कई बार हमारे साथ कुछ ऐसा घट जाता है जिससे हमारा आत्मविश्वास डगमगा जाता है, हमारी संकल्प शक्ति क्षीण पड़ जाती है। ऐसे में जरूरी होता है उस घटना के हर पहलू को देखना और उसमें से मिले सबक को हमेशा के लिए याद रखना। व्यक्तिगत रूप से मैं यह मानती हूं कि कोई भी घटना बुरी नहीं होती। उसे देखने का हमारा नजरिया गलत होता है। हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। इसी तरह हर घटना का सकारात्मक और नकारात्मक पहलू होता है। बस जरूरत है सकारात्मक पहलू पर ध्यान केंद्रित रखा जाए। ऐसी ही एक घटना याद आ रही है। कुछ साल पहले मैं यूएन मिशन पर गई थी। वहां हमें आठ-आठ के समूह में अपने जिम्मेदारी के इलाके में गाडी पर 4 घंटे पेट्रोलिंग करनी होती थी। एक दिन पेट्रोलिंग के लिए ट्रक दिया गया। पेट्रोलिंग के दौरान बातों ही बातों में किसी ने कह दिया कि ट्रक,बस और ट्रेन चलाना महिलाओं के वश का नहीं। मैंने इस बात का विरोध करते हुए कहा कि ट्रक बस और ट्रेन चलाना स्कूटर या कार चलाने जैसा ही है। लेकिन आठ लोगों के समूह में मैं अकेली महिला थी और बाकी सातों ने इस बात पर मेरा मजाक उड़ाया। मैंने उसी समय ड्राइवर को ट्रक साइड में लगाने के लिए कहा। ड्राइवर से ट्रक की चाभी मांगी तो पहले उसने चाभी देने से मना कर दिया लेकिन थोड़ी मान मनोबल के बाद वह इस शर्त पर चाभी देने को तैयार हुआ कि वह साथ वाली सीट पर बैठेगा। मैंने उसकी शर्त मान ली और दो घंटे ट्रक चला कर पेट्रोलिंग पार्टी को सही सलामत कैंपस तक पहुंचा दिया। कैंपस पहुंचकर मैंने उन सभी से कहा कि कभी किसी महिला को कमजोर न समझना। शक्ति की देवी दुर्गा हैं, कोई पुरुष नहीं।

प्रीति सुराना-महिलाओं को वर्तमान हालातों से कैसे उबरना चाहिए?

प्रणीता सिंह- महिलाओं को त्याग, करुणा और दया की देवी बता कर उनके व्यक्तित्व को बंधक बना दिया गया है। महिलाएं अपने वास्तविक रूप में जी ही नहीं पातीं। समाज की अपेक्षाओं को पूरा करते करते वे अपने सपने, अपने अरमानों को अपने ही हाथों कुचल देती हैं। इसके लिए समाज से अधिक वे स्वयं दोषी हैं। देवी बनना ही क्यों? स्वयं को हाड मास का इंसान मानें, जिसके सीने में दिल धड़कता है, अरमान मचलते हैं। जिसे अपनी पसंद का खाने की, पहनने की आजादी हो। जिसे अपना जीवन अपने तरीके से जीने की आजादी हो। और यदि देवी ही बनना है तो शक्ति की देवी दुर्गा बनाये, विद्या की देवी सरस्वती बनिये और ऐश्वर्य की देवीलक्ष्मी बनिये। सबला बनिये, अबला नहीं। यकीन मानिये, आपको चाहने वाला हर व्यक्ति आपको त्याग, करुणा और दया की देवी के रूप में नहीं बल्कि, दुर्गा, सरस्वती और लक्ष्मी के रूप में देखना पसंद करेगा।

प्रीति सुराना-महिलाओं को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर कोई विशेष संदेश आप देना चाहेंगी?

प्रणीता सिंह- अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर मैं महिलाओं को यही संदेश देना चाहूंगी कि आप ईश्वर की सबसे अनमोल कृति हैं। ईश्वर ने आपको अदम्य साहस, शौर्य और दृढ़ संकल्प के साथ-साथ दूसरों को समझने वाला मस्तिष्क भी दिया है। आपके हृदय में रक्त के साथ-साथ ममता का भी संचार किया है। पुरुष से आप उन्नीस नहीं, इक्कीस ही हैं। ईश्वर ने आपको क्षमतावान, ऊर्जावान बनाकर भेजा है। यदि आप अपनी वर्तमान स्थिति से संतुष्ट नहीं हैं तो इसके लिए कहीं न कहीं आप स्वयं जिम्मेवार हैं। स्वयं को टटोलिए, उठिए और अपना जीवन संवारिए। किसी और का इंतजार न कीजिए। जब आप स्वयं को सम्मान देंगी तो दूसरे आप को सम्मान देने के लिए मजबूर हो ही जाएंगे।

प्रीति सुराना-आपका बहुत बहुत आभार प्रणीता जी । आपसे एक सारगर्भित चर्चा अवश्य ही महिलाओं को प्रेरित करेगी एवं सोच को एक सार्थ दिशा प्रदान करेगी। आभार आपने अपना कीमती समय हमें दिया।

साक्षात्कारकर्ता

डॉ. प्रीति सुराना

संस्थापक एवं संपादक

अन्तरा शब्दशक्ति

मानवीय मनोभावों पर मन से लिखी गई कविताओं का संग्रह है "सुनो बात मन की मन से"

(डॉ. प्रीति सुराना का काव्य संग्रह एक समीक्षा)

समीक्षक एवं साहित्यकार

श्री प्रणय श्रीवास्तव "अश्क"

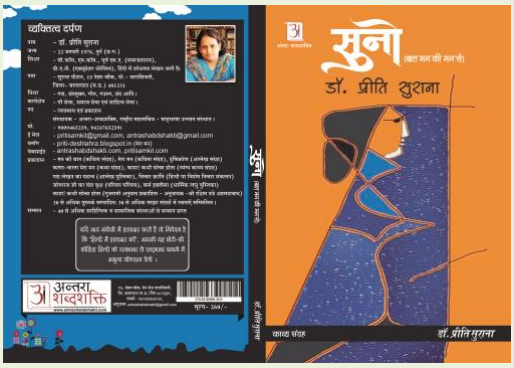

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के मध्य में स्थित म.प्र. के बालाघाट जिले की धान्य नगरी वारासिवनी में विगत अनेक वर्षों से हिन्दी साहित्य की सेवा में तन-मन-धन से समर्पित महिला रचनाकार एवं कवयित्रि डॉ. प्रीति सुराना के काव्य संग्रह "सुनो बात मन की मन से" कुछ दिनों पूर्व ही मुझे पढ़ने मिला। आधुनिक हिन्दी साहित्य में नव कविता की जो विधा परिलक्षित हो रही है उसमें डॉ. प्रीति सुराना निश्चित रुप से पारंगत हैं। जैसा कि हम सब जानते हैं कविता की नव विधा में रस, छंद और अलंकार के व्याकरण संबंधी कड़े नियमों से दूर हटकर स्वच्छंद परिवेश में उत्कृष्ट शब्द चयन के माध्यम से जिस शब्द शक्ति का प्रयोग किया जाता है वही आधुनिक नई कविता कहलाती है। प्रीति सुराना ने अपने कविता संग्रह में सीधे सरल शब्दों में अपने मन की बात व्यक्त करते हुये कल्पना के मीत "सुनो" के माध्यम से बहुत गहरी और मौलिक भावनाएँ रखने का प्रयास किया है। काव्य संग्रह की भूमिका में लेखक शिखरचंद जैन ने कहा है- "भूत, वर्तमान, भविष्य की जो भी बातें कल्पनाएं या संवेदनाएँ उनके मन में ऊपजीं वे सब उन्होंने "सुनो" से कह डालीं और अपना मन हल्का कर लिया।" काव्य संग्रह की पहली रचना "मेरी रचनाएँ" शीर्षक में प्रीति कहती हैं "मुझ सी होकर भी सिर्फ मेरी कभी नही हो सकती कविताएँ, सृष्टि के वैविध्य का दर्पण हो सकती हैं मेरी रचनाएँ"। इसी तरह "सुनो! बात मन की मन से" शीर्षक रचना में वे कहती हैं- "अब मैं महसूस करती हूँ जैसे मेरे आस-पास कोई है, जो मुझे मुझसे ज्यादा समझता है, मेरी पीड़ा, मेरी खुशी को महसूस करता है, मुझे संभालता है जब मैं हालात के चलते, कमजोर पड़ने लगती हूँ।" कवयित्रि का यह अंतरभाव लगभग हर रचना में महसूस होता है। एक कविता में वे लिखती हैं "आज उस अदृश्य प्रेम के समक्ष नतमस्तक हूँ जिसने तुम्हारे रुप में साकार होकर हौसला जगाया और हाथ थामकर फिर चलना सिखाया।" अपने शब्दों के बारे में प्रीति कहती हैं "मेरे शब्द बहुत जिद्दी हैं। रह-रहकर बाहर निकलते है कमजोर हूँ मैं, इन्हें संभाल नहीं पाती। वंशीधर कविता एक अच्छी कविता है जिसमें कवयित्रि कहती हैं "जीवन हमेशा श्वेत-श्याम नही होता, पर धरती लाल न होकर हरी, आकाश स्लेटी न होकर नीला होता इस तरह जीवन के यथार्थ को व्यक्त करने की अनोखी शैली प्रीति जी ने अपनाई है। "मैं तो तुम्हारी ही हूँ।", "बेईमान", "सौगात", "रब", "यादों का पिटारा", "बस यही दुआ है", "राज

की बात", "अकाल के बाद", "कालचक्र", "हिचकियाँ", "अपनों से प्यार", "पनीली आँख", "दर्द", "मजबूर", "मेरी धुरी", "आखिर ये नदी का हक है", "अपनों की खातिर", "परेशान", "प्रकाश कुंज", "मेरी जिंदगी", "सिर्फ एक दुआ", आदि कवितायें पाठकों को मन से बांधने का प्रयास करती हैं। अपनी "संवाद" शीर्षक कविता में जो बात प्रीति जी कहती हैं वह शाश्वत सत्य है। वे कहती हैं "मैंने तुम्हारी खामोशी को हमेशा सुना है ये सही है पर जो तुमने कहा, वही मैंने समझा हो, ये जरुरी तो नही।" ऐसा प्रतीत होता है कि यह बात कविता संग्रह के पाठकों पर भी लागू होती है। "याचक का दर्द" कविता जो कि इस काव्य संग्रह की उत्कृष्ट कविता है जिसमें वे कहती हैं "एक डर आत्म सम्मान के झगड़े में तुम्हें खो न दूँ, याचना तुमसे साथ की प्रेम की, बस तुम दूर न जाना, हमेशा तुम्हारे सारे दुःख मेरे और मेरे सारे सुख तुम्हें समर्पित, बस तुम खुश रहो सदा।" ऐसा कहकर कवयित्रि ने काव्य संग्रह की अंतिम कविता "एक संकेत दीप के जरिये" में काव्य संग्रह का निचोड़ रख दिया है। कविता लंबी है किन्तु कवयित्रि के मन में उठ रहे ज्वार भाटे को किसी तीर्थ के समान स्थापित करती है। कवयित्रि कहती हैं "अनैतिकता के अंधकार में फैल रही कृपण दशा में खोती जा रही अपने "देश की आभा" तलाशती हूँ। मेरे भीतर बर्फ में दबी आग की तरह दफन है ढेर सारे भाव, आक्रोश, गुस्सा, जिज्ञासा .....।" इन शब्दों में कवयित्रि ने यह सिद्ध कर दिया है कि कलमकार को राष्ट्र की चेतना के लिये सतत सजग रहना होगा। ऐसा माना जाता है कि जो व्यक्ति मेधावान, गुणवान और विद्वान होते हैं वे अपने विश्राम के समय को भी सृजन में ही लगा देते हैं। यही कारण है कि शारीरिक अस्वस्थता के दौरान भी विश्राम के क्षणों में प्रीति जी ने अनेकों काव्य संकलनों का संपादन कार्य तो किया ही साथ ही पारिवारिक जिम्मेदारियों को कुशलता से निभाते हुये स्वयं का ग्यारहवाँ काव्य संग्रह भी प्रकाशित करने में सफल रही। अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन के माध्यम से उन्हें साहित्य साधना में उत्तम स्थान प्राप्त किया है। उनकी काव्य संरचना शब्दों का सार्थक प्रयोग है संग्रह का काव्य पक्ष कला पक्ष की तुलना में ज्यादा प्रभावी है। यद्यपि कहीं-कहीं अंग्रेजी उर्दु शब्दों का या अरबी शब्दों का प्रयोग किया गया है किन्तु कवयित्रि ने हिन्दी शब्दों के लिये ज्यादा परिश्रम किया है। मुहावरों का प्रयोग बहुत कम है किन्तु अभिव्यक्ति का तरीका श्रेष्ठ है। "पदबंध" का प्रयोग भी कहीं-कहीं दिखाई पड़ता है। तत्सम एवं तद्भव शब्दों के साथ ही देशज एवं ध्वनि वाचक शब्दों का प्रयोग भी करने का प्रयास रचनाकार ने किया है। काव्य संग्रह रस एवं अलंकार प्रधान नही लगता है किन्तु शब्द शक्ति के माध्यम से कवयित्रि ने अपने अंतर भावों को तथा विशेषण एवं सर्वनामों से प्रकट करने का सकारात्मक प्रयोग किया है। शब्दगत अशुद्धियाँ बिल्कुल नही हैं जो कि रचनाकार को सजग रचनाकार बनाती है। कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि डॉ. प्रीति सुराना का काव्य संग्रह मानवीय मनोभावों पर मन से लिखी गई कविताओं का संग्रह है। जिसमें परिस्थितियों से जूझते हुये जीवन को जीने का संदेश कवयत्री ने दिया है। संकलन पाठकों को नई सोच देता है। संकलन के प्रति एवं रचनाकार के प्रति मेरी कोटि-कोटि हार्दिक शुभकामनाएँ। **समीक्षक एवं साहित्यकार, श्री प्रणय श्रीवास्तव "अश्क", वारासिवनी जिला बालाघाट (म.प्र.) मो.नं. 09424979678**

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से प्रकाशित पुस्तकों की एक झलक

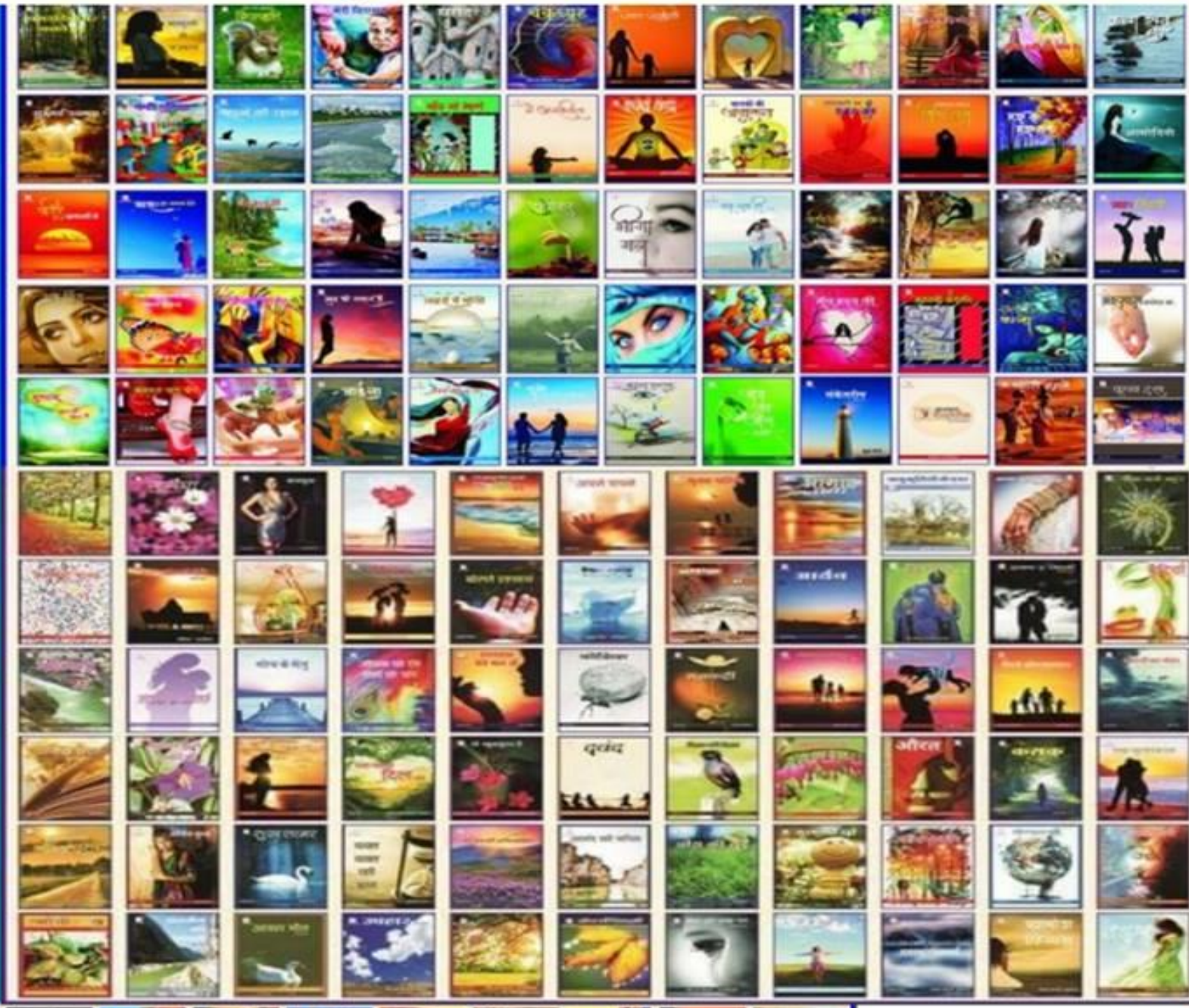

अन्तरा शब्दशक्ति

हम आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

www.antrashabdshakti.com

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन क्रान्ति का आरंभ

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन की यात्रा

प्रथम अन्तरा शब्दशक्ति से सृजन शब्दशक्ति सम्मान 2017 भोपाल में आयोजित जिसमें विमोचत हुआ साझा संग्रह।

द्वितीय अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान 2018 इंदौर में आयोजित जिसमें विमोचत हुए 8 साझा संग्रह और 1 एकल पुस्तक।

महिला दिवस 2018 में विमोचित हुए वूमन आवाज साझा संग्रह, जिसमें शामिल रही 50 से अधिक महिलाएँ।

लघु पुस्तिका क्रान्ति का आरंभ हुआ सृजन समीक्षा से, जिसमें 49 किताबों का हुआ विमोचन।

इतिहास में हिन्दी आन्दोलन का बालाघाट में विमोचन।

भोपाल में आयोजन हुआ वूमन आवाज अवार्ड का जिसमें 55 महिलाओं की 66 पुस्तिकाओं का विमोचन।

मातृभाषा उन्नयन संस्थान के सहयोग से हिन्दी आन्दोलन को समर्पित 8 पुस्तिकाओं सहित 5 अन्य पुस्तकों का विमोचन।

दिल्ली में अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान 2019 के आयोजन में 60 से अधिक पुस्तकें विमोचित व रचनाकार सम्मानित।

दिल्ली में मातृभाषा उन्नयन सम्मान 2019 के आयोजन में 30 से अधिक पुस्तकें विमोचन और रचनाकार सम्मानित

- मात्र ११ माह की अवधि से सेवारत
- दौ सो अधिक किताबें प्रकाशित
- ५०० से अधिक सम्मानित लोग
- १५० से अधिक एकल पुस्तिकाएँ
- लगभग १५ आयोजन इन ११ माह में
- ५ स्थायी अन्तरा शब्दशक्ति के सम्मान